कल जो मैंने कहा था

मत्स्येन्द्र शुक्ल की कविताओं का प्रतिनिधि संकलन

कल जो मैंने कहा था

मत्स्येन्द्र शुक्ल

विद्या प्रकाशन गृह
८८६ कल्याणी देवी
इलाहाबाद

संस्करण □ १९९१

मूल्य □ अस्सी रुपये

प्रकाशक □ विद्या प्रकाशन गृह,
९८६ कल्याणी देवी, इलाहाबाद

मुद्रक □ विद्या मुद्रण गृह, इलाहाबाद

कवि केदार नाथ अग्रवाल के लिए सादर

अनुक्रम

शब्द यात्रा / ११
शब्दों में कितना धोखा है / १३
एक सम्पूर्ण महाद्वीप / १५
मेरे पास कुछ विचार हैं / १७
कहाँ गलत था मैं / १९
मुझे ले चलो / २१
तुम चला रहे थे हल / २३
बोलेंगे शब्द / २५
संघ का आदर्शवाद / २७
स्वर्णिम पंख पसार / २९
शहर ने कब दिया है गाँव
का साथ / ३१
कहाँ गये वे लोग / ३५
गुम-सुम खड़ा है देश / ३७
अजीब है समय / ३९
गजब है देश की जनता / ४१
सुबह कोई नहीं पूछता / ४३
कौन रहेगा उनके साथ / ४५
हवा बिल्कुल खिलाफ है / ४७
बन्द कमरों में हो रहा है बयान / ४९
यद्यपि यह सच है / ५१
तब यह मतलब नहीं होता / ५३
मैं उनकी पहचान में सावधान
हूँ / ५५
केवल महसूस होता है / ५९
ओ जमींदार / ६१
युद्ध पूर्व की रात्रि में युधिष्ठिर
का चिन्तन / ६३
भूखे किस्म के लोग / ७३
जनतन्त्र के गीत / ७५

अधिकांश लोग सावधान हैं / ७७
महादेश के लोगो / ८१
भाग्य कहाँ है उनके साथ / ८३
जनतन्त्र चलेगा सरपट / ८५
केवल आकाश है उसके साथ / ८७
कविता—१ / ८९
कविता—२ / ९१
कौन पढ़े अखबार / ९३
जनता की लड़ाई है / ९५
देश के महान लोगो / ९७
कोई उठा दे मुझे / ९९
वह आदमी बोला नहीं / १०१
अभी कुछ लोग हैं / १०५
क्योंकि जनतन्त्र भाषा का
खेल है / १०७
रोटी / १०९
बाजार गर्म है / १११
नहीं हुजूर / ११३
आग / ११५
कविता / ११७
उसे पकड़ लो भाइयो / ११९
तुम सब को दिखा दूँ / १२१
अँधेरे का भय / १२३
अस्तित्व का संकट / १२५
असहज यात्रा / १२७
किसने कहा था / १३१
समय / १३३
मेरे देशवासियों १ / १३५
मेरे देशवासियों २ / १३७
मेरे देशवासियों ३ / १३९
अमफल महामंत्री / १४१
कविवर / १४३
अदृश्य नदी / १४५
राम भरोसे / १४७
मेरे देश के मालिक / १४९
ऐसा क्यों होता है / १५०
एक निर्भय चेहरा / १५१
बन्दूक है अब / १५२
कौन है / १५३
जमीन पर चलो / १५५
सब बुझाने में जुटे हैं आग / १५७
होता है सब कुछ / १५९
अँधेरे में अँधेरा / १६१
सुबह जो सपना आता है / १६५
मेरी यह दुनिया / १६९

कहाँ हैं वे लोग

शब्द-यात्रा

अनुभूति को सघन परिभाषा देने
यथार्थ को अति-यथार्थ से जोड़ने में
बीत गये तमाम युग
स्पष्ट न हुआ / कहाँ से शुरू किया जाय
आंदोलित भाषा में / शब्द-यात्रा

कौन सुनाये रामायण / ग्रंथ-महाग्रंथ
शब्द फिसल / मुकर जाते हैं / व्याख्या-प्रसंग में

साहित्य / आनन्दवाद का नवीन संस्करण नहीं है
वह चलता है / साधारण जन की गति के साथ
तभी तो रचनाकार / वैभव-चमत्कार के विरुद्ध
जीवन भर छानता है खाक

देखो / कुछ झुककर / अन्यथा समीप से देखो
कौवे मँडरा रहे हैं सुबह-शाम
कि फटे तवे पर रोटी / फुलौरी नहीं पकती
अचरज में महसूस किया कौवों ने
केवल उड़ रहे हैं कागज / जर्जर कक्ष में

कुछ आवेश / कुछ संवेदना / रत्ती भर क्रोध व्यक्त कर
अन्ततः उड़कर / वह बैठ गया / पेड़ की डाल पर

कहाँ है वह कलाकार
जिसने आकार दिया / रंग भरा / चित्र में
भ्रम स्थापन का अद्भुत ज्ञान है उसे

होगा / जरूर होगा कहीं / वह कलाकार
गढ़ रहा होगा चुप-चुप / भविष्य का इतिहास
अतीत से जोड़ कर / किसी दिन / किसी क्षण
वह जगा सकता है वर्तमान का सुप्त अध्याय

रचनाकार का कोई मकान नहीं होता
प्रकाश और जल या वायु ने / कहाँ बनाया है
विश्राम स्थल
ज्योतिर्मय शक्ति के लिए विश्राम मृत्यु है

शब्दों में कितना धोखा है

कल्पना के शिखर बने / ढह गये अकस्मात्
जैसे उंचास पवन-बीच रुई का महल
झिर-झिर नष्ट होता है अस्तित्व / ज्यों बालू में जल

हरी लताओं के उन्नत वक्ष पर / जो पुष्प हँसते सुबह
साँझ / वही पड़ जाते हैं म्लान
यद्यपि बगीचे में ठंडी हवा का चलना या मचलना
पूर्ववत जारी रहता है

कुछ सफेद / कुछ काले / खरगोश के नरम बच्चे
जो दौड़ के क्रम में / समूह से हो चुके हैं अलग
दुम दबाये पूछ रहे हैं / शृगालों की बस्ती में
वतन का रास्ता
शब्दों में कितना धोखा है / क्या बूझें मासूम बच्चे

वे रास्ते / धुंध भरे गलियारे
जहाँ हरीतिमापूर्ण / माधवी कुंज का फैलाव था / कभी
पता नहीं / वृक्ष के तनों और पत्तियों में
कैसे घुल गया जहर
अनाथ गिलहरियाँ चिक-चिक लेती हैं / प्रभु का नाम

अब शिकारी किस्म के राजकुमार जायेंगे / उस जंगल में

जो हहर रहा है दिन-रात / राजधानी के समीप
आम आदमी के पहुँचने पर वहाँ पूर्ण प्रतिबंध है

देखो / सम्हल कर देखो यारो
तालाब के समीप / आकाश देख / मिमियाँ रही हैं बकरियाँ
बच्चों की याद में रोने के अतिरिक्त और क्या
कर सकती है महतारी

शक्ति जिधर है उधर / दाँत चियार सब उठा देते हैं हाथ
प्रणामी मुद्रा में अर्पित करते हैं अभिवादन
ऐसे में मुट्ठी भर लोग / कैसे अलंकृत कर सकते हैं भाषा

एक सम्पूर्ण महाद्वीप

अफ्रीका / नहीं-नहीं / एक सम्पूर्ण महाद्वीप
जाने कब-से झेल रहा है / बे-मौसम की आग
उत्तर / कभी दक्षिण / कभी पश्चिम
पूरब में कभी उठती हैं / प्राण घातक चिनगियाँ
स्वस्थ खलियाये बकरे की तरह
तमाम वाक्यांश वहाँ हो चुके हैं लावारिस

धर्म और रंग-भेद की कुटिल राजनीति में
आदमी हलाल कर रहा है / बे-गुनाह बिरादरी
समुद्र पर उड़ते शैतान उन्हें दे रहे हैं सहयोग

महल से विदाई लेकर जब चले थे शैतान
कहा गया था / तब उनसे / चेतावनी के लहजे में
ऊँचे मकानों को कर देना जमीन के बराबर
आदमी जहाँ / जिस रूप में दिखे
उसे वहीं समाप्त कर देना / जब रंग-ही न होगा
तब कौन उठायेगा रंग-भेद का सवाल

जाओ / हवा की तरह तत्काल पहुँच जाओ
उसुक दो विरोधियों की खाल
फिर क्या / समुद्र में तैर चलीं असंख्य पनडुब्बियाँ
हवा और समुद्र घबड़ा गये / महाक्रान्ति के लक्षण से

किन्तु समय भी क्या चीज है
कर दिया है उन्मादियों का हौसला पस्त
वारूदी फूलों से जूझ रहे हैं वे / जो
मैदान में देख लिये हैं जनतंत्र का सपना

अफ्रीका महाद्वीप जाग गया है
उठ रहे हैं असंख्य वीर / महावीर
उनकी गर्जना से दहल चुके हैं ऊँचे श्वेत महल
सुविधा परस्त अफसर / अच्छी हैसियत के सेनापति
तलाश रहे हैं समझौते का सिद्धान्त

वक्त आने पर
षडयंत्र के सामने नहीं झुकता / स्वाभिमानी देश

मेरे पास कुछ विचार हैं

मुझे मुक्त करो / मुक्त करो कारागार से
खोल दो खिड़कियाँ / बंद दरवाजे
मेरे पास कुछ विचार हैं / नवसृजित शब्द
चाहता हूँ / उन्हें उठा कर रख दूँ / समाज के समीप

समूह में / शब्द पूरा कर लेते हैं अपना उद्देश्य
फिर अँधेरे का संकट नहीं घिर पाता
व्यक्ति-मन / महादेश में

करीब से देखो
शब्द खेल रहे हैं / ठीक मेरे सामने
क्या लीलामय इस रहस्य का कोई अर्थ नहीं होता

होता है / जरूर होता है / मेरे भाई
किन्तु आदमी है कि युगों बाद समझ पाता है
संकेत का वास्तविक अभिप्राय

तूफान के चपेट में होने के उपरान्त
जब कभी सोच के दलदल में कँहरता है आदमी
तड़कता है अनायास / तब एक और बवंडर
प्रतिक्रियावादी हाथ उछाल / मान लेते हैं सहर्ष
सत्य अभी सुरक्षित है / मानसूनी जलवायु में

मैंने तमाम चीजों का अनुभव किया है
सीलन-भरे बदबूदार / अँधेरे कमरे-बीच
अकेले में बुदबुदाया / चिल्लाया बार-बार
पर कोई न था जो मेरे संकेत को
भाषा का अलंकार दे / अनुभूति को सार्थक बना सकता

कारागार में गूँजती आवाज को सुनता है कौन
केवल संवेदनशील हवा है / जो रोशनदान के सहारे
निरन्तर देती है / सान्त्वना के जीवित शब्द

पर क्या होगा / यह सब / सुन-सुना कर
मेरे लिए जरूरी है किसी तरह बाहर हो जाना
देखना है / आकाश में कैसे उगता है / सुबह का सूर्य

समय के चक्रवात ने
सब कुछ छीन कर / मुझसे कर दिया है अलग
जैसे वृक्ष से डाल / डाल से पुष्प / पुष्प से मनोरम गंध

कहाँ गलत था मैं

कहाँ गलत था मैं / याकि मेरे शब्द
किन्तु संदेहवश / समाज के एक वर्ग ने मान लिया
मद्धिम हवा को / असाधारण तूफान
विरोध में / धम-धम / वजने लगा नगाड़ा

भ्रम की स्थिति में / थम-थम / दौड़ पड़े कुछ लोग
छिछना कर पटक दिया / चिहरा गये शब्द
भाषा के खिलाफ / हुड़दंग से / भीड़ का क्या मतलब
हुआ / क्योंकि होना था / एक पवित्र शब्द की हत्या

पलक खुलने पर देखा
दिशाएँ उदास हैं / परेशान है नक्षत्र-मंडल
रास्ता भूल / चंद्रमा खो गया है / बादलों के झुरमुट में

इस बीच / दगाबाज किस्म के लोगों ने समझाया
काँपो नहीं / धैर्य धरो / धैर्य की सीमा तक
खेल शुरू होने पर अक्सर यही होता है देश में
किसने कहा था / ईमानदार शब्दों के साथ चलो
भोगो / जैसे कि भोगना चाहिए दण्ड का परिणाम

कनखियों का सहारा दे / वे सब चले गये / उस तरफ
जहाँ लोग आग जला / भून रहे थे जीवित बकरे / मछलियाँ

खतरों का सार्वजनिक परिचय दिये बगैर
लोग कैसे-कैसे बिछा देते हैं / भाषा की अनमोल चादर
जनता उलझे / जैसे काले वस्त्रों में उलझ जाता है साँप

सुनो / कान उटेर कर सुनो
कहाँ से / कैसे उठ रही है भयावह बर्बर ध्वनियाँ
मुनियाँ क्या समझे / दुनिया किधर जाने वाली है

पत्थर पर / पत्थर पटकने से
न महल का निर्माण होता है / न उठता है झोंपड़ा
पता नहीं / इक्कीसवीं सदी में क्या होगी / आदमी की भाषा

मुझे ले चलो

हे भाई / तुम्हें इतिहास नहीं समझता / न समाज शास्त्र
राजनीति में / वोट के अलावा कोई जगह नहीं है
तुम्हारे जैसे / गँवई व्यक्ति के लिए
क्या करोगे ऐसे में / पढ़कर नागरिक शास्त्र

नदी की ओर मत चलो / बढ़ो मैदान की ओर
वहाँ तमाम लोग खड़े हैं तुम्हारी प्रतीक्षा में
वे पढ़ायेंगे पहाड़ा / सुनायेंगे गिनती
फिर बतायेंगे / कैसे चल रहा है प्यारा देश

देखो / शान्ति का आदर्शवाद देखो
कूदकर छिप गया है बकरों के झुंड में
लटकती तलवार से भयभीत / मिमिया रही हैं बकरियाँ
रोने के अतिरिक्त / बकरी के लिए / क्या बचा है दुनिया में

रंगीन दीवारों के बीच कैद हैं / न्याय के अनमोल शब्द
मुन-मुन कुछ कहता फिर लिखता है पीठासीन व्यक्ति
कलई खुलने के भय से काँप जाता है सम्पूर्ण शिविर

ऐसे में / सब तरफ बिगड़ जाता है ताल-मेल
बुलाने पर आदमी भागता है पश्चिम की ओर
जैसे पानी धरा है रेगिस्तान में / उसके लिए

इधर आओ मायाराम / यहाँ देखो कुछ और करिश्में
न्यायाधीश उचक-उचक / देख रहा है
उस किसान का चेहरा / जो पुकार की प्रतीक्षा में
फफका रहा है चिलम का धुआँ

दूसरा आदमी चिल्लाता है कोने में कि ले चलो
मुझे / मेरे गाँव की ओर
मरणोपरान्त न्याय का कोई मतलब नहीं होता

जहाँ देखो / वहीं मची है गदाबद
लोग रेती से रेत रहे हैं / देह पर उभरी नसें
अँधेरा / अँधेरे को / विनम्रमतापूर्वक करता है प्रणाम

तुम चला रहे थे हल

मुझे साफ तौर पर याद है
पहली बार देखा था तुम्हें
बाग के समीप / उस चौरस खेत में
जहाँ कमजोर बैल को / कंधे का सहारा दे
तुम चला रहे थे हल

कुछ दिन बाद / फिर देखा / उस ताल के पास
जहाँ पानी उठा फटाफट फेंक रहे थे
उन खेतों की ओर / जिसमें पौधे हो रहे थे म्लान
फिर-भी तुम प्रसन्न थे / वसन्त के पुष्प ज्यों

आखिर में / उस बरसाती भोर में
जब रिमझिम बरस रहा था जल
तुम चला रहे थे दनादन फावड़ा
अँधेरे में / चमक रहा था फाल / दिव्यमणि ज्यों

मुझे नहीं मालूम
चाहे जैसी रही हों / व्यक्तिगत परिस्थितियाँ
हौसला हमेशा बुलंद था / निर्भय था चेहरा

जमीन को यथा समय / जो देता है अलंकार
आकाश उसे-ही मानता है सहृदय / उदार

गाँव ने तुम्हें किस हद तक समझा
या दिया उपहार-सम्मान / मुझे क्या पता
पर यह सच है
तुमने पौरुष के बूते / गरीबों को दिया है
संघर्ष का अमिट संदेश

श्रम का जो समझता है अभिप्राय
कालान्तर में वही बन जाता है / युग-पुरुष

बोलेंगे शब्द

कोई आ रहा है धीमे-धीमे / सहमा-सा
इतिहास के असंख्य पन्ने / पीठ पर लादे हुए
क्षितिज-अंक में / जैसे छाया

कुछ फासले पर सिर उठा / खड़े हैं उदास लोग
समझना चाहते हैं / भविष्य के उप-दृश्य
किन्तु यथार्थ का संदर्भ नहीं दिखता / उन्हें / वर्तमान में

गाँव के गलियारों में
बंदूक तान / खड़ी है सौम्य भीड़
सहमें-से तने हैं लोग / क्या किया जाय आज के दिन

तस्वीरनुमा एक व्यक्ति आयेगा / कुछ देर में
हवा में / तरतीबवार रख देगा कुछ शब्द
फिर घोंसले से उड़ना शुरू कर देंगे तमाम पक्षी
देखते-देखते / आकाश भर जायगा / विचित्र आवाज से

चिनगियाँ छाने पर / शब्द उठेंगे / बोलेंगे शब्द
सुनेंगे लोग / कि सोने-खाने-मुस्कराने
घर बसाने पर क्यों लगा है प्रतिबंध
क्या सुबह / चौराहों पर नीलाम हो / गुलाम बन जाना
यही है / मनुष्य के संदर्भ में / युग-धर्म

प्रश्न होते हैं अनेक / उत्तर नहीं मिलता एक
आसान किस्तों और तरीकों में शुरू हो जाती है
सर्वमान्य भाषा को उखाड़ देने की साजिश

जब-कभी / खास मतलब से जुटती है भीड़
समझा-बुझा उसे लौटाया जाता है / घर की ओर
बक-बक / कुछ दिन चलती है / खास लोगों की बहस

अफवाहों में पैदा होती हैं / तमाम अफवाहें
अवसर की ताक में बैठा व्यक्ति / एकाएक
घोषित कर देता है
कि लोग ज्यादा संख्या में हो चुके हैं पागल
पागलों का सही तरीके से किया जाय उपचार

संघ का आदर्शवाद

दुनिया की सर्वोच्च पंचायत में
युद्ध-घेराबंदी और बेगुनाहों की हत्या के विरुद्ध
जब कोई दमदार प्रतिनिधि शुरू करता है वक्तव्य
सार्थक शब्दों में देता है
विश्व-राजनीति को तर्कपूर्ण / सामयिक आधार
सुन कर भी / न सुनने का नाटक रचते हैं तब
मुट्ठी भर तथाकथित बड़े घरानों के राजकुमार

वह पूछता है और पूछता रहता है देर तक / मुट्ठी तान
कि समुद्र-तटों / द्वीपों / छोटे देशों के आस-पास
किसके इशारे पर उठता रहता हैं धुआँ
प्रक्षेपास्त्रों के प्रयोग से कौन करता है / स्थिति को विस्फोटक

ऐसा क्यों होता है सौम्य किस्म के महान लोगो
मौन रहने का समय नहीं है फिलहाल
चुप रहे बिल्ली जिसे प्रतिक्षण मृत्यु का भय है

ताकतवर देशों के परेड-ग्राउंड में
सुबह-शाम दिये जा रहे हैं उत्तेजक भाषण
प्रत्येक नये भोर में / बढ़ रही है युद्ध की सम्भावना
महासंघ के लिए शान्ति / अब केवल एक मुहावरा है
ऐसे में कब-तक ढोया जाय / संघ का आदर्शवाद

अभी दुनिया के नक्शे में शेष हैं कुछ राज-घराने
ये साधन-विहीन वर्ग को क्षमा नहीं करेंगे
चलेगा अर्थ का अव्यक्त शोषण / खुद के पक्ष में
अमीर कब चाहता है / गरीब दो कदम आगे बढ़ जाय

भाषा में कठोर किन्तु यथार्थ वाक्य सुन
कुछ सदस्य नाराज होते हैं आँखों में
कुछ हँसते हैं मुलायम कुर्सियों पर उछल कर
जैसे अन्तर्राष्ट्रीय पंचायत कोई चीज नहीं
केवल बैठकी लगाने का एक बहाना है

जो विचार देता है पश्चिम घराना
उसे साफ इंकार देता है पूरब घराना
तीसरा पक्ष / कुछ बोलने के पहले सोचता है कई बार
आखिर हिरोशिमा-नागासाकी ने क्या बिगाड़ा था
हमेशा के लिए खतरे में पड़ गयी
एक अच्छे देश की जलवायु

पंचायत से उठ गया है अधिकांश लोगों का विश्वास

स्वर्णिम पंख पसार

संध्या के आगमन का संकेत मिलते-ही
किस जमीन की सुखद स्मृति में
सज-धज कर तैयार होने लगती हैं
सुकुमार चिड़ियाँ
नन्हें / स्वर्णिम पंख पसार

आरम्भ में चलती हैं द्रुत-गति / पृथ्वी पर
फिर उड़ान भर बैठ जाती हैं
वृक्षों की ऊँची / हवा में लहरती डाल पर
अन्ततः मधुर संगीत बिखेरती
घुमावदार उड़ान के साथ खो जाती हैं
धुंध-धुले अनन्त आकाश में

जैसे लौट कर / यहाँ फिर नहीं आना होगा

ज्ञात-अज्ञात / सूक्ष्म और अनन्त का
असाधारण मनोविज्ञान / शायद यही पक्षी-धर्म है
युगों से चल रहा है साधना का महारथ

दार्शनिक क्या जाने वह अलिखित दर्शन
भविष्य-दृष्टा वहाँ तक पहुँचने में असमर्थ हैं
कवि-कलाकार मौन हो जाते हैं एक सीमा के बाद

अपनी-ही रचना में खोया है वैज्ञानिक / निरर्थक

असहज संकेतों में चिड़ियाँ व्यक्त करती हैं
मुक्ति-पथ का रहस्य / क्योंकि उन्हें
ऋचा और ब्रह्म-सूत्रों का सम्यक बोध है

चिड़ियाँ इतिहास-पुरुष होने की चिंता में
समाज के खिलाफ नहीं रचतीं षड्यंत्र
वे बोलती हैं भाषा में / कल्याणवाची शब्द
विश्व के उत्थान में निहित है उनका मुख

राष्ट्रों के बीच उल्कापाती युद्ध को देख
वे गरदन झुका देर-तक विसूरती हैं एकान्त में
गजब है इंसान जो बर्दाश्त कर रहा है तूफानी प्रहार
कौन रोक सकता है / हवा में विष का फैलाव

चिड़ियाँ उन्मुक्त रूप से सदैव गायेंगी गीत
सुनायेंगी प्रसन्न-मुख / प्रभु का आदिम संदेश
जो समझेगा / वही प्रकाश और ऊर्जा का समन्वय कर
समाप्त करेगा / सदा के लिए / पृथ्वी का बोझ

शहर ने कब दिया है गाँव का साथ

भोर के सन्नाटे को तोड़ती
फुर-फुर गुम हो गयीं चिड़ियाँ / आकाश में
अनन्त के द्वार पर हो रहा है नाट्याभिनय
विचित्र संकीर्तन
कोई देखता है / कोई नहीं देख पाता यह दृश्य

वैरागियों के अलौकिक स्वर में
चिड़ियाँ सुनाती हैं पर-हित के महामंत्र
ध्वनि का मंत्र बन जाना / सुखद प्रसंग है

सूर्यागमन के साथ कहीं आयोजित होगी दिव्य सभा
कोई महाशक्ति / कोई आदि शक्ति
कोई गरुड़ / काकभुसुण्डि ज्यों सुनायेगा
कल्याणप्रद अलौकिक आख्यान

जो समझेगा
वही निर्मल मन / प्रत्येक जन को बतायेगा
कैसे वर्णों के संयोग से बन जाता है
व्यूह परक / काल सापेक्ष / बीज-मंत्र
मंत्र-शक्ति का सम्यक बोध है केवल पक्षियों को

मनुष्य सदैव रहा है अनुकरणवाद का पोषक

जिधर देखता है हिरण को दौड़ता
ठीक उसी तरह समझ लेता है जल का स्रोत

आकाश में होता रहा / सौन्दर्य का सौन्दर्य से मिलन
किन्तु स्वार्थ और ईर्ष्या से जुड़ा आदमी
नहीं समझ पाता सगुणोपाख्यान
वैसाखियों के सहारे वह शुरू कर देता है
मरुस्थल में / अगली यात्रा

पक्षियों का मौन नृत्य प्रतिदिन होगा भोर में
गूँजेंगे अमर गान / किन्तु तर्क-धर्म से बोझिल
शास्त्राचार्य कहेंगे / कहाँ है साधारणीकरण
मधुमती भूमिका की रचनात्मक स्थिति
छंद बिना कौन लिख सकता है सार्थक कविता

उठो-उठो / उठो मेरे ग्राम-बंधुओ
सूर्य को प्रणाम करो
पढ़ो अँधेरे के विरुद्ध कोई सिद्ध मंत्र
चक्करों में फँसा देश तुम्हें देगा आशीष
वैभवोन्माद में शहर सोता है / उसे सोने दो
सोचो / शहर ने कब दिया है गाँव का साथ

अँधेरी रात का सूर्य

कहाँ गये वे लोग

देखो-देखो / देखो देशवासियो
चुपके-चुपके / वहाँ / क्या हो रहा है
जो गलत / बिल्कुल निराधार
उसी को सही कहा जा रहा है

बाजा न बजने पर
जाने क्यों / कुछ लोग पीट रहे हैं बजनियाँ को

२

पुरानी इमारत पर
हम-सब / कब-तक लगायेंगे चटक रंग
बनते-बनाते / छिड़ सकता है एक और जंग

बेमानी की दशा में / चप्पे-चप्पे पर
लगातार हो रहे जंग से मुक्त किया जाय अवाम को
अवाम वगैर हम नहीं समझ सकते / आकाश की ऊँचाई

सुनो-सुनो / कान लगा कर सुन लो
कोई रोता-सा / कँहरता कह रहा है
जल-प्लावन की हालत में डूब चुका है
देश का मध्यांचल
ऐसे में नहीं चाहता समझना / शब्दों का ठहाका
काका से सुन चुका हूँ बचपन में तमाम कहानियाँ

कहानी में होता है एक राजा / एक रानी
कोई सुन्दर / कोई छछुंदर / कोई कानी
मुझसे क्या मतलब भइया
भाड़ में जाय महारानी
यहाँ सिर के ऊपर पहुँच चुका है पानी

३

मझधार में कैसे पहुँचाया जाय / तृण का सहारा
डूब रहा परिवार / क्रमशः पूरा देश
जो भी पहुँचता है / नीचे से ऊपर की ओर
उसी का बदल जाता है भेस

समय के सामने अब कौन रखेगा
तर्क सम्मत सार्थक वाक्य
भाषा के मदारी / लेना चाह रहे हैं वैराग्य

४

तलाशो-तलाशो / कहाँ गये वे लोग
जो साध रहे थे / जनतंत्र के बलिष्ट घोड़े
रह-रह / गरीबों पर तान रहे थे / आदर्श के कोड़े

वे जरूर उपस्थित मिलेंगे / उस तरफ
जहाँ होगी हरी-हरी / लहराती-सी घास
हरीतिमा देख सदैव हिनहिनाये हैं / चालबाज घोड़े

इन घोड़ों / इनके मालिकों के रहते
असम्भव है पूरा हो पाना / जनतंत्र का उदार लक्ष्य

गुम-सुम खड़ा है देश

चेहरे पर नकाब डाले / जाने कहाँ से
आ रहा / उदास किस्म का एक जत्था
कुर्सियों पर बैठे लोगों को देना चाहता है धक्का

बिगड़ैल समूह देख
आरामतलब चेहरों से चूने लगा है पसीना
छल के बल जो आगे रहे / उन्हीं का दब गया है सीना

२/
भूरिल पहाड़-सा गुम-सुम खड़ा है देश
जम-जम का पानी पिलाने आये हैं दरवेश
खरगोश सुना रहे हैं / न सुनने लायक कहानियाँ

३/
शहर के मध्य / बीच चौराहे पर
सतर्क फेटाधारियों का अजब है पहरा
वे देख रहे हैं उड़ती चिड़ियों के नेत्र
परख रहे हैं / दिलों में भड़क रही / भयावह धड़कनें

असंतुष्ट / उठाते-गिराते हैं पैर
मोर्चे पर डटे / ऊर्जायुक्त महारथी की तरह

ऐसे में शहर के किनारे
सन-सन / देर तक सनकते हैं धुंधकारियों के शब्द

४/
आरामदेह / चमकीले बिछौनों पर
लेटे हैं बुजुर्ग / उमरदार सेठ साहूकार
ममखरी के दाँव में मशगूल लड़कियाँ
कस रही हैं / ईरानियन हुक्के की चिलम
जवान औरतें फुर्त हाथों से डुला रही हैं पंखा

५/
ईंट-पत्थर से राजमार्ग भरा है
अखबार समाचार उछालने में खरा है
अजनबीपन की हालत में / जन-प्रतिनिधि दे रहे हैं
साधार-निराधार / बयान

सम्पादक मौन / लिखता है केवल दो-चार शब्द
शब्दों के भीतर से निकाल देता है तीसरा शब्द
कि नयी पीढ़ी सार्वजनिक जगहों पर बेहोश पड़ी है
हवा शान्त / ट्रैफिक जाम / प्रशासन सावधान
किन्तु गिद्ध और बाज उड़ा रहे हैं आदमी का मजाक

भयावह ताप / घर तपे सड़कें तपीं
महानगर झल्लाता रहा कई दिन तक
आँख झपा / झरोखे से देखते हैं / बेकसूर बच्चे
मासूम चिड़ियों का उड़ना / गिरकर मर जाना

६/
रक्त-पोषित / ऐसे माहौल में
कोई नहीं सुनाता अर्थ-पुराण
सुनाते हैं / बाइबिल भागवत कुरान
जिनका भूखे आदमी से कोई मतलब नहीं होता

अजीब है समय

अजीब है समय / अजीब हैं लोग
सही को गलत / गलत को सही
साबित करने में परेशान हैं श्रेष्ठ लोग

उद्देश्यहीन हालत में रखे जा रहे हैं
साधारण किस्म के पर्यायवाची शब्द
शब्दों के खेल में खो गया है सम्पूर्ण देश

२/
जमादार झाड़ू फेंक / बोतल की तलाश करता
पहरेदार आँख मिला हँसता है झाड़ी के पास
जैसे कुछ क्षण बाद / उसे मिल सकता है अलौकिक आनन्द

अर्से बाद पता चलता
यहाँ अधिकांश लोग गोट पर गोट बिछा
अँधेरी गलियों में छिप जाते हैं चुपचाप
मठ के दरवाजों पर झूलने लगता है जनतंत्र का ताला

राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियों से जाने क्यों पलायन कर चुके हैं लोग

यह वक्त उनके पक्ष में समर्थन देता है
जो शराबखाने में बैठ / करते हैं जन-गीत का अभ्यास
बाद में / अँधेरे की खामोशी में / साध लेते हैं अपना काम

३/
देश में लोग / जब खो देते हैं खुद की पहचान
जूझते हैं आपस में / उठा लेते हैं तीर-कमान

अंधों के संघर्ष में
जब कोई समझदार / पूछता है सवाल
लोग दौड़ कर नोच लेते हैं सिर के बाल

मतलब कि हो रहा है जो / उसे होने दिया जाय
माटी के भाव अनाज बिकने दिया जाय
सिर फोड़ने से / आसमान नहीं आता जमीन के पास

समय और सत्ता का आदेश समझ
दूरदर्शन / आकाशवाणी / अखबार / बोल देते हैं तत्काल
रात गये पहाड़ पर हो गयी थी बारिश
अतः मैदान में लबालब बह रही हैं छोटी-बड़ी नदियाँ
बाढ़ से घबड़ा कर पेड़ों पर बैठने की जरूरत नहीं है फिलहाल

गजब है देश की जनता

जिन्हें देश का इतिहास / इतिहास का दर्द नहीं मालूम
जो महलों में / सदा से खेलते आ रहे हैं खेल
गजब है सियाराम
आज / वही पहुँच गये हैं सत्ता के समीप
आँख में धूल झोंक / बैठ लिए हैं ऊँची-ऊँची कुर्सियों पर

जिधर चाहते हैं उधर मोड़ देते हैं जनतंत्र की बैलगाड़ी
जैसा चाहते हैं वैसा बना लेते हैं कानून
संविधान में संशोधन / उनके लिए मामूली बात है

जब देश के किसी कोने से विरोध में उठती है आवाज
तब पान चबा / धीरे-धीरे कहते हैं संसद के दरवाजे से
बहकावे में न आयें देश के जुझारू नागरिक
जो हम करें / समझें सब /शासन में वही कला है
गुणा-बाकी करने में भारी बला है

चलने लगता है इस बीच / एक-के-बाद दूसरा / उत्तेजक भाषण
लेकिन सियाराम / गजब है देश की जनता
दिन उठते / उसने बता दिया शब्दों का सही अर्थ
फिर क्या / सब तरफ होने लगा अनर्थ
अनर्थ की आँधी में न राजा सुरक्षित है न रानी

सभर्थकों से घिरा / सिरफिरे किस्म का आदमी
राजनीति अर्थशास्त्र कानून की किताबें
सब एक साथ पलट / कहता है
देश की प्यारी जनता क्यों नाराज है / जबकि
ऐसी व्यवस्था पहले कभी नहीं थी / शहर से बाजार तक
हर वस्तु उपलब्ध / चीजें सही-सलामत हैं
कौन कहता / रोटी के अभाव में दम तोड़ रहे हैं बच्चे

जनतंत्र में एक और तंत्र जोड़ देने से
क्यों घबड़ा जाते हैं लोग
अँधेरे में औरतें क्यों बड़बड़ाती हैं अतुकान्त
जबकि बिल्लियाँ खामोश बैठी हैं राजमार्ग पर

सियाराम / बहरा आदमी चश्मा उतार / अचानक
प्रसारित कर देता है / दस-बीस मुलायम आदेश
होता कुछ नहीं / उल्टे और भड़क जाते हैं भीड़ में खड़े लोग

आओ सियाराम / बहुत हो गया
अब चलें उस ऊँची इमारत की ओर
कुछ लोग / कल रात से वहाँ मचा रहे हैं शोर
भोर होने तक कोई अच्छा-सा आदमी हो सकता है हलाल

सुबह कोई नहीं पूछता

जो भी लौटता है पार से
पाता है / बँध चुका हूँ एक तार से
बंधन-मुक्ति का संदर्भ नहीं दिखता / दूर तक

गली हो / सड़क या तिराहा
सब धुंध में डूबे
जैसे खुल गया हो धुएँ का / मौन फौव्वारा

बच्चे हैं / बच्चे खेलते हैं मौज में
उछलते हैं मस्ती में
दिन के छलावे में देर तक भूले रहते है
भूख का अगम दर्द

रात आने / अँधेरे में दुलारने पर
खाली पेट सोते हैं / भोर तक
ठंड में अकड़ जाती है मुलायम देह

सुबह कोई नहीं पूछता
रात किस तरह बीत गयी / बताओ लाल
उदास आँखों का सहारा दे / गम खिलाती है महतारी

घर में माँ है / बहिन है / भाई है

झाऊ ज्यों अंधा-सा बाप है
किसके सहारे कहाँ तक चला जाय
कौन सम्हालेगा झुकने पर कंधा

२/
स्कूल जाने / किताब रटने की बात
करते हैं अधिकांश लोग
किन्तु रोटी के मसले पर नहीं बोलते लोग
धौंस जमाने से नहीं जमता आदर्शवाद

उपदेश के खिलाफ सीना तान खड़े हैं बच्चे
समाज चाहे-तो कह ले / बुद्धि में अभी वे हैं कच्चे

शास्त्रार्थ में जुटे समूह को किन शब्दों में समझाऊँ
कि एक पूरी की पूरी अभावग्रस्त पीढ़ी / खाली पेट
यहाँ जीने के लिए मजबूर है
आदमी की अजब तकदीर है

कौन रहेगा उनके साथ

गरीबों का अजीब हाल है
जहाँ-भी पहुँचता / वहीं होता बे-हाल है

दिवास्वप्नों के बीच दिखता है / एकान्त में
भग्नाभूत गिरोह
एक हाथ में पत्थर / दूसरे में गोला
पता नहीं / किस पल नष्ट होगा / गरीबों का टोला

वंशी-रव के बहाने आये हैं कुछ लोग
साँस खींच / सुना रहे है नया स्वर
लय ताल छंद मुक्त

दो पाटों के बीच अवसर यही होता है
अवसरवादी फरेबियों का
जाने क्यों हर युग में भला होता है
मुसीबत के मारों की / नहीं लेता कोई खबर

मंच पर बैठे धन्नासेठ किस्म के लोग
दनादन छोड़ते हैं कामचलाऊ शब्द
शब्द का अर्थ समझ / कहते हैं सतर्क अनुयायी
धुआँ चाहे जितना उठे
कुर्सी छोड़ने का समय नहीं आना चाहिए भाई

खतरनाक भाषा में गुँथे शब्द सुन
जंगल के एकान्त / खदानों में काम करता आदमी
नहीं समझ पाता / तोप का मोहड़ा किस तरफ होने वाला है
कहाँ बैठा है वह / जो किसी क्षण दे सकता है
जमीन से आकाश तक / धुआँ फैलाने का कठोर आदेश

कट-कट पत्थर काट / एक साथ चिल्लाते हैं मजदूर
नासूर बढ़ाने में जिनका रहा है कसूर
नष्ट करेंगे हम उनका गरूर
जब-तक चाहें / खसोट लें अभी / श्रम के सौदागर

शोषण के विरुद्ध / सब जगह शुरू हो चुका है चिंतन
निर्णय के दिन / नये सिरे से / फिर होगा मंथन
इतिहास जैसा चाहे / कर-ले / परिवर्तन का अंकन

मजदूरों को मालूम है
गरीबी खत्म करने की आखिरी लड़ाई में कौन रहेगा
उनके साथ / उसी भीड़ पर उन्हें है पूरा विश्वास

पीस लें बड़े लोग / जब-तक हवा चल रही है / उनके पक्ष में

हवा बिल्कुल खिलाफ है

भइया राम / अजब हाल है / हवा बिल्कुल खिलाफ है
जो जहाँ / कुछ देर बाद वहीं / हो जाता साफ है
घर को चिट्ठी भेजने तक / वहाँ नहीं रह पाता सकुशल
चिट्ठी पढ़ शब्दों का अर्थ निकालने वाला व्यक्ति

सब तरह से पस्त पड़ चुका आदमी
सन्नाटे में / चुपचाप बोतल निकाल जी भर पीता है
मस्ती छाने पर / गाने के बहाने दुखड़ा रोता है

उसका दर्द सुने बगैर
सब चले जा रहे हैं खुद के घरों की ओर
दिमाग पर जोर देने को तैयार नहीं है कोई आदमी

हर तरफ से टूट चुका / चित पड़ा गुमनाम यात्री
दिन में देखता है / रात का मजेदार ख्वाब
मदहोशी में जंघा सहला भरता है आह
कभी रंक / कभी बहादुरशाह

अरे ! कहाँ से आ रही है यह / करुण आवाज
महाघाट / सिर झुकाये रो रहा है
अनाथों का अनाथ समूह
जाने कब कटेंगी बेड़ियाँ / टूटेगा पुरातन व्यूह

भइयाराम ! विचित्र है देश / विचित्र है न्याय
हर तरफ फैला-सा बिछा है दानवी जाल
मृतक की गवाही में पेश हैं दलाल

शोरगुल के बीच हो रहा है बयान
राम जानें / किस रूप में मिलेगा परिणाम

फैसले के वक्त छा जाता है कुटिल अंधकार

भइयाराम ! बातों में बातों का भ्रम छोड़ / सुन लो
यहाँ हर-कोई मुफ्त में / खाना चाह रहा है
गरीब की कमाई / मीठी मलाई
रोये / जितना चाहे रो-ले / गरीब की माई
कमजोर की औरत बनती है गाँव भर की भौजाई

भइया राम ! बहुत जल्द अब उठाना है एक आवाज
जिसे सुन काँप जाय सम्पूर्ण आकाश
तभी जनता में उपजेगा साहस / फैलेगा उल्लास

अनर्थ का अँधेरा खत्म होने के उपरान्त
तब होता है युग-परिवर्तन
इसीलिए कहता हूँ / अभी बहुत-कुछ करना शेष है भइयाराम

बंद कमरों में हो रहा है बयान

जब कभी सन्नाटा खींचता है / देश का श्रेष्ठ नगर
अप्रत्याशित / उड़ती है अगम धूल
मिटती है / सदियों की बनी-बनायी डगर

भीड़ के साथ चलती है / एक और भीड़
जैसे भेड़ के साथ / कुछ और भेड़ें
भैंस के साथ कुछ और भैंसें / पूंछ तान

क्या पता / कौन है इनका चरवाहा
किसके नेतृत्व में जा रहा है समूह / मैदान की ओर

अनास्था के बावजूद
आदमी बढ़ रहा है धधकते नगर की ओर
भौचक्का-सा देखता है घुमावदार लपटें

लाल हवेली के पास
बैठें हैं / मुकदमों में फँसे लोग
गिन रहे हैं / हथेलियों पर अंकित रेखाएँ
भाग्य किसी कीमत पर / साथ देने को तैयार नहीं है

साँस लेने की समस्या से जूझ रहा है / गाँव का आदमी
जैसे ढोंग से निपटना / हर हालत में हो लाजमी

अजीब दृश्य है / लाल-पीली काठयो के भीतर
एक ओर अनाथ परिवार / दूसरी ओर
बंद कमरों में हो रहा है बयान
अकुलाये बुजुर्ग / हर बात पर लगाये हैं कान

कानून के भाव-बोध से आकंठ न्यायाधीश
उचकता-सा कहता है
शहर गर्म / न्याय का पैमाना बदल गया है
किसे करूँ अन्दर / किसे करूँ बाहर
खिलाफत में / दीवारों पर चिपक रहे हैं पोस्टर

समझ में नहीं आता / ऐसे में कहाँ जाऊँ
किस तरफ झोंपड़े का द्वार करूँ / किन्हें प्रणाम
बेहोशी के पहले / याद आ रहे हैं तमाम नाम

यद्यपि यह सच है

वैसे मुझे वह दिन याद है
जब नाराज आदमी सिर पर पट्टियाँ बाँध
आवेश में बोल रहे थे / अतुकान्त असहज वाक्य
कि देश की जमीन पर
उनका पैतृक अधिकार ज्यादा बनता है
ताल से ज्यादा झील में पानी रहता है

सधे वाक्य सुन
सब रह गये थे बुझकर
छोटों के सामने बड़े छिप रहे थे बौने बनकर

देह की हिफाजत की चिंता से मुक्त
सब मिल-जुल / देख रहे थे दहकती आग
आग से ज्यादा उन लोगों से खतरा था
जो राह में चित पड़े बिछा रहे थे बारूद

यद्यपि यह सच है
उनके चलने से काँप रही थी जमीन
थर-थर झुक रहा था उन्नत आकाश
दिशाओं के देवता कर रहे थे पश्चाताप
बादलों ने बताया / प्रकृति है गरीबों के साथ
अतः समुद्र से वार्ता करने का औचित्य नहीं बनता

जनता के सम्मुख सिर झुका
आत्म-समर्पण करता है वड़े-से बड़ा तानाशाह
सेना का घट जाता है / वना-वनाया उत्साह

२ /
उनका कोई नेता न था
जो थे / वे सव वोल रहे थे साफ किस्म की भाषा
उज्ज्वल भविष्य के प्रति उनमें बँधी थी
गजब की आशा

वे शब्दों में ईमानदार / विल्कुल स्पष्ट थे
कह रहे थे / अव नहीं चलेगा देश में / तुष्टीकरण का सिद्धान्त

बुझदिल इमारतों की खिड़कियों से झाँक
क्रोध में गिनगिना रहे थे चालवाज
वाप-रे / इन्हें किसने वता दिया राजनीति का राज

अभी-तक मुल्लही वन / जो बैठे थे पेंच पर
वे बुलबुल ज्यों उड़ रहे हैं आसमान में
देश को अव ले चलना पड़ेगा
आदर्श जनतंत्र की ओर
बगैर कुछ किये नहीं बचा पायेंगे प्राण

तब यह मतलब नहीं होता

मैं इतिहास बदलने की बात नहीं करता
नहीं कहता कि रास्ता छोड़ / किनारे-से चलो
हाँ / लीक खराब है तो / उसे जरूर छोड़ दो

जब-कभी ठंडे पानी में नहाने का सवाल
पेश करता हूँ / तब यह मतलब नहीं होता
कि पहाड़ी चोटियों पर सवार हो / बर्फ में गलो
या झरने से पानी उलीच उस तरफ बढ़ो
जहाँ आग लगी है / झाँखर-जंगल में

इतिहास पहरेदार है / पीछे-पीछे चल रहा है एक समूह
समूह देश के प्रति बेहद वफादार है
धोखा देंगे वे / जो कमरों में दिखा रहे हैं करामात

शोषण के विरुद्ध
हम मिलकर उठायेंगे आवाज
समय को समझने से बनता है देश का भाग्य

इतिहास / समय का दिव्य दर्पण है
घायल और हँसमुख चेहरों का दर्शन है
यदि चाहो तो / नये तर्ज पर / चीजों को सम्हाल कर
करीने-से यथा स्थान रख दो

सिंहासन पर सदैव बैठता है / विजयी नरपति
सिर झुकाये टहलता है सेनापति
अवसरवादियों के पक्ष में सुरक्षित हैं तमाम रास्ते

राजा के अलिखित संविधान की तहत
सिपाही टहल सकता है किसी-भी जमीन पर
परेशान रहता है किसान / खुद के मकान में

सही इतिहास लिखने की बात करते हैं सब लोग
पर जाने क्यों चतुर्थ अध्याय तक पहुँचते
उठ जाता है / हवा में भयावह तूफान

समाजवाद के ठीकेदार तब चले जाते हैं
व्यवसायियों के घर पर / कहते हैं गम्भीरतापूर्वक
देश को बनाने के लिए / हमें कुछ और धन चाहिए

सोचो / अफरातफरी की हालत में
हाँफता-सा कैसे चलेगा / इतना बड़ा देश
देश को बनाने के लिए जनता को सहना है क्लेश

मैं उनकी पहचान में सावधान हूँ

व्यक्ति से नहीं / समूह से घबड़ाता है नेता
बैठ जाता है बगल में / धार में जैसे रेता
पैसा और सत्ता / दोनों का एक साथ करता है यशगान

निरुद्देश्य बयान जारी कर कहते हैं उपनेता
बजा है कभी / अब फिर से बजेगा जल तरंग
अनेक तर्जों में समझो देश का जनतंत्र

जनतंत्र जैसे मँगरू की दुलहिन है
जो चाहे / जब चाहे / जैसा चाहे / ठान दे मजाक

मैं उनकी पहचान में सावधान हूँ
जो मशाल टाँग टहल रहे हैं / पलाश-वन में
मजदूरों को बहकाने के अर्थ गा रहे हैं गाना

पिचके गाल / भूख से व्याकुल पेट दिखाने पर
कुर्ते की बाँह सिकोड़ / वे सब मिलकर कहते हैं
घबड़ाओ नहीं / धैर्य धरो
माल से अटे पड़े हैं / पठार के तमाम गोदाम

अनाज आज नहीं / कल रहेगा
समझो / जैसे समझना चाहिए / आधुनिक अर्थशास्त्र

नेता / उप-नेता / महा-नेता मे कैसे कहा जाय
वे अपने-ही शब्दों में हो चुके हैं बे-लगाम
गरीब समझते हैं
वे कब और कैसे जारी करते हैं बयान

राजा-महाराजा / जमींदारों की पिसाई में
गरीब / परिवार सहित परेशान है
दिन से रात / रात से दिन / पड़ रहा है भारी

जनता उठ पड़ी है समझने के लिए फूलों का रंग
समझ के उपरान्त तमाम चेहरे हो जायँगे / बदरंग

संघर्ष छिड़ने पर कोई नहीं पढ़ता
इतिहास की पुरानी किताबें
क्योंकि सब चाहते हैं तैयार करना / इतिहास की नयी किताब

कुछ दिन जंगल में

केवल महसूस होता है

लोगों में तमाम लोगों के व्यवहार से संतप्त
जव मैं समाज के एकान्त में
बैठता हूँ चुपचाप
तब विचित्र रंगों में घुले
और चमकते आसमान को देख
असमंजस की स्थिति में सोचता हूँ सिर झुका
कुछ है कि जमीन उदास है खुद के परिवेश में
होनहार वृक्ष भी सिकुड़कर
निरन्तर हो रहे हैं बौने
अकाल पड़ने तक पृथ्वी का गर्म रहना स्वाभाविक है

मौत सामने है / नाटकारम्भ के साथ
ऐसे में / नदी में डूबते व्यक्ति को
कब-तक मिलेगा तिनके का सहारा
चीजें वही हैं
स्थितियाँ वदल जाती हैं अनायास
विपरीतार्थक शब्दों को समर्थन दे / जाने क्यों
लोग घबरा रहे हैं मेरे सोचने की पद्धति से

विचित्र है / पलायनवादी हो रहा है
वर्तमान इतिहास
माँग रहा है आत्मरक्षा की व्यवस्था

भय रहित / संशय मुक्त हो / अब कौन बतायेगा
अतीत का वर्तमान से सम्बंध

उन चीजों के साथ ऐसा क्यों हो रहा है लगातार
जिनका देश की सांस्कृतिक विरासत से गहरा सम्बंध है
कहाँ तक सम्हाला जाय महाजाल का बोझ
प्रत्यक्षतः अनुभव कुछ नही होता
केवल महसूस होता है / सपाट मैदान का भयावह सन्नाटा

सोच के क्रम में / कविता की तमाम पंक्तियाँ लिए
मैं दौड़ने लगता हूँ उन उदास गाँवों की तरफ
जहाँ पेड़ की टुन्नियों पर दिखता है प्रकाश का आधार

वातूनी किस्म के लोग / जो अँधेरे में आगे निकल चुके हैं
वे सार्वजनिक संकट से परिचित होते-ही
दाँत घिस / ढाल देते हैं शब्द
कि रोते क्यों हो / सुख चारों तरफ फैला है
रात में बटोरो सामान / मौज करो दिन में

इतिहास कब था हमारे साथ / याकि राजनीति के आचार्य
उनके सिद्धान्त टूटने दो / टूटने की हद तक
सहारा दो / हम तैयार कर दें
एक और आचार-संहिता / प्रबंध-शास्त्र
तब लोग खा-पी सकेंगे निश्चिन्त-मन देश में

ओ जमींदार

ओ रईस ! ओ जमींदार
बँधुआ मजदूर की हैसियत में
अब तुम्हारे यहाँ काम नहीं करूँगा
नहीं भरूँगा चिलम में सुगंधित तम्बाकू
अगम संतोष की हालत में / धीरे-धीरे
खामोश हो चुकी हैं तमाम पीढ़ियाँ
पता नहीं इस वक्त / उनकी दर्द और कसक भरी
मार्मिक ध्वनियाँ / कहाँ होंगी / वायु-मण्डल में

सूरज कभी अस्त नहीं होता
वह प्रतिक्षण मौजूद है / अनन्त आसमान में
हमारी संतानें किसी माने में कम नहीं हैं सूरज से
प्रकाश छीन / उसे छिपा लेना / दउरी से ढाँक देना
कहाँ का न्याय है / मेरे मालिक

बड़ों के बच्चे दून स्कूल में मौज करें
सौ की जगह / हजार खर्च करें
और गरीब के बच्चे
दिन भर भैंस चरा रात में कोयर कतरें
ऊपर से चढ़ा लात
पीठ पर निरर्थक बोझ रख पाना असम्भव है
सोचो / ऐसे में कैसे चलेगा देश / मेरे मालिक

रास्ता दिखायेंगे हम / तुम नहीं
समझो कि आसमान में कैसे चमक रहा है
नये किस्म का प्रभामाण्डित सूर्य

दो पाटों के बीच निरन्तर दबे रहने का
कौन दे रहा है उपदेश
जबकि सम्पूर्ण राष्ट्र शताब्दी का पाल्हा चूमने
आल्हा सुना ललकारने की तैयारी में / जुटा है जी-जान से

आदमी को कमजोर समझ / शक्ति का मजाक उड़ाना
सम्भव नहीं है / खासकर आधुनिक संदर्भ में

चला / क्योंकि परिवर्तन का इतिहास खड़ा है / मेरे द्वार पर

युद्ध-पूर्व की रात्रि में युधिष्ठिर का चिंतन

जंगल के एकान्त में / टहल रहे हैं धर्मराज
उद्देश्यहीन / किन्तु सोच-मग्न हैं महाराज
जैसे शिकारियों के चंगुल में फँस चुका हो हिरन

शंकाकुल / असमर्थ और विवश युधिष्ठिर सोचते हैं
लगातार सोचते हैं / विचित्र मानसिकता में
कोई नहीं / जो उन्हें समझाकर कहे
बैठ जाओ / दो पल के लिए बैठ जाओ / युधिष्ठिर

ज्योतिर्मय उन्नट ललाट पर / क्रमशः
फैल रही है मौन उदासी
जैसे म्लान होने के समीप हो महाज्योति
महापुरुष डरता है केवल अंधकार से

२ /
आकाश अनन्त है
अनन्त है क्षितिज-व्यापार
विनम्र पिंड की तरह अविकल घूम रही है
ममतामयी निश्छल पृथ्वी
अखंडराग / आदिम संस्कार के साथ

थके-हारे नक्षत्र टहल रहे हैं विवश
आकाश के अगम फैलाव में

नियमबद्ध / प्रतिबद्ध / अनुशासित
किन्तु प्रश्नवाचक चिह्न के साथ

कौन है / जो देगा / प्रश्नों का सार्थक उत्तर

युधिष्ठिर हैं
किन्तु वे स्वयं बन चुके हैं अनुत्तरित प्रश्न

३/
वह कौन है
जिसने जकड़ कर बाँध लिया है
महाशक्तियों को / प्रचंड महाजाल में
इन सब का कहाँ और कब पड़ेगा पड़ाव
सुविधा-प्रतीक / शान्तिमय विश्राम

नहीं-नहीं / रुकेंगे नहीं ये
जायेंगे वहाँ / जहाँ धधक रही है आग
खेलेंगे पागलों की तरह फाग

पता नहीं
किस तरफ उतरेंगे / श्वेत पंखों वाले हंस
कौन सुनायेगा व्यथा की कथा
अद्भुत है यातना झेलते रहने की संस्कृति
विश्वास में बँधा-सा झूल रहा है ब्रह्मांड

४/
अँधेरे में कौन पढ़ सकता है
ज्योतिष के अंक-पत्र
भग्न रटती रातों / बियाबान जगहों में
कहाँ-तक साँस लेगा कोई सम्भ्रान्त देश

अंधों में काने किस्म के

तथाकथित तेजोमय पराक्रमी लोग
फाल बिना चला रहे हैं हल
पता नहीं क्या होगा श्रम का परिणाम

५/
मैं अर्थात युधिष्ठिर
पाण्डवों में प्रथम
अपनी ही चिंतन-परिधि में पराजित
रह-रह / देख रहा हूँ
ब्रह्मांड में चल रही अनगिन यात्राएँ
स्वयं-में काँप रहा हूँ जैसे पीपल-पात

सोच रहा हूँ
महामाया के सूक्ष्म संकेत पर
कैसे प्रकाशित होते या बुझते हैं
असंख्य ब्रह्मांडिक सूर्य
ओह / इन्हीं ज्योति-शिखरों से जुड़ा है
पृथ्वी / चाँद और मंगल का अस्तित्व
धरती की बंजरता आश्चर्यजनक घटना होगी

६ /
महल हो या जंगल / नदी का किनारा
जन-शून्य / निविड़ एकान्त
जाने कहाँ से आती है एक ध्वनि
टकराती है कानों से बार-बार
कि युद्ध-भूमि की ओर चलो युधिष्ठिर
कोई विकल्प नहीं है युधिष्ठिर

अन्याय पर न्याय को सदा मिली है विजय
अग्नि-वर्षा से मत डरो / सत्य-धर्मा युधिष्ठिर

निपट निर्जन में खड़ा हूँ मैं

फिर-भी लुका-छिपी में जाने कहाँ से आ रहे हैं
दनादन भयावह शब्द / संवेदनशील ध्वनियाँ
ध्वनि की शाश्वत महायात्रा को
मैं रोक नहीं सकता
क्योंकि अनन्त स्वयं ध्वनिमय है

७/
ये कौन / अरे ! ये कौन हैं
मेरा नाम ले छिप जाते हैं अँधेरे में

ऐसा तो नहीं / प्रत्येक कण में
समा गया हो / भ्रम का अभेद्य जाल
कौन है / जो सचेत हो बतायेगा
सम्भावनाओं का असाधारण भविष्य

सोच और तनाव / चिंता से क्या होगा
जो होना है / होकर रहेगा

ओह / ग्रहों के संयोग ने बिछा दिया
युद्ध का विनाशक महाजाल
मुक्ति दे / बचा सकते हैं केवल कृष्ण
किन्तु वे भी चुप हैं
जैसे महायुद्ध / उनकी लीला का अंग हो

८/
महापथ / ओ भटके यात्रियों
कहाँ से चले हो / कहाँ-तक जाओगे
किसकी तलाश में परेशान हो दिन-रात

सुना दो अनन्त का रहस्योपाख्यान
सत्यासत्य का आधार
मैं ब्रह्मांड की भाषा / भाषा में शब्दानुशासन

समझने के लिए व्याकुल हूँ
प्रचलित भाषा के अभाव में
आदमी / आदमी को समझ नहीं पाता

९ /
प्रार्थना / हाँ / यह सच है
प्रार्थना के शब्द निरर्थक नहीं जाते
शक्ति बन हो जाते हैं / अनुभूति के अभिन्न अंग
आत्मजयी-ही पा सकता है विजय
कर्ममय अगम सृष्टि पर

बादलों के गाँव से कौन ताक रहा है मुझे
दृष्टि खोल एक पल निहार लो
मैं निराश हूँ
मुझे ले चलो / अगम प्रकाश की ओर
सम्भव है सार्थक हो जाय / यह जीवन

१० /
सच है / कल-परसों तक उठेगा
प्रलयंकारी तूफान
हतभागे टूट कर बिखरेंगे / सूखे तिनके ज्यों
कौन कहाँ होगा उस क्षण
कैसे होगा
प्रभु जानें / जाने प्रभु की माया

हिरन के सुकुमार बच्चे दौड़ रहे हैं
भूखे-प्यासे / उदास / हँफरते
इन मासूमों को नहीं मालूम
कुछ-ही दिन में इस मिट्टी पर लिखा जायगा
विनाशक महायुद्ध का इतिहास
व्यूह / महाव्यूहों में खड़े होंगे
अपने-ही परिवार के खिलाफ हथियारबंद लोग

अक्षांश और देशान्तरों के बीच
फैले समुदाय के लोग पहली बार देखेंगे
भाई कैसे करता है / भाई की हत्या / खुलेआम
विपरीत मानसिकता में सब सम्भव है / समाज में

११ /
जंगल-जीवों के लावारिश शिशु
गर्दन झुका बैठे हैं सरपती झुरमुटों के बीच
इनका बर्फीली ठंड / तपन से क्या मतलब
हवा और पानी से चल रहा है जीवन

अपराधहीन / फिर भी आक्रान्त हैं
भविष्य के अनिश्चय से
सब को प्रिय है अपनी देह / अपना प्राण

हथियारों से लैश
गुस्सैल सिपाहियों की भीड़ देख
सहमी-सी उचकती है मुलायम गिलहरी
पत्रहीन पेड़ की टुन्नी पर
सोच की स्थिति में झुका लेती है सिर
सुकुमार गर्दन
कि आदमी इस हद तक हो सकता है
मूल्य-मुक्त / संवेदनहीन
हत्या / आत्महत्या से बढ़कर
क्या और कोई पाप सम्भव है दुनिया में

१२ /
हवा चन्न-मन्न थमी-सी खड़ी है
रात उदास है / विवाहित विधवा की तरह
अनिश्चय की स्थिति में / ठाँव-ठाँव
साँस बाँधे पड़े हैं नागरिक
औरतें दे रही हैं बच्चों को आखिरी दुलार

निर्दोष समाज से युद्ध का क्या मतलब
किन्तु वही ढेर होंगे मैदान में
इतिहास / ऐसे में
अक्सर चल देता है अनिश्चय की ओर

समय बीत रहा है नियमानुसार
और मैं जड़-सा खड़ा हूँ आम्र-वन के बीच
कैसे चलूँ पाण्डव-शिविर की ओर
धनात्मक घृणा और खुशी की ऋणात्मकता में
सम्भव नहीं है ले पाना / सुख की साँस

१३ /
कौन करेगा तेज हवा से बात
कौन महसूस करेगा अन्तर्मन की वेदना
वृक्ष-गुम्फों / डाल पर सुलग रही है आग
फूलों की हत्या का कारण जानता हूँ मैं / केवल मैं

स्वार्थ-मुक्त / फिर भी पराश्रयी हो युधिष्ठिर
चाहो / न चाहो
अँधेरे-बीच तुम्हें चलना पड़ेगा युद्ध की ओर

१४ /
कहाँ जाऊँ / क्या करूँगा दूर जाकर
दिख रहा है नगर मेरा
ज्यों सफेद वस्त्र में लिपटी हो अनाथ की लाश
पाप की जमीन पर कुल-विनाश सुनिश्चित है

कहाँ हो / कहाँ हो भाई दुर्योधन
समझो राष्ट्र का अर्थ / भविष्यत् काल
धृतराष्ट्र की परिभाषा
क्या तुम्हें कुछ नहीं महसूस होता दुर्योधन
विचित्र गति से चल रहा है समय का रथ

आकाश-पत्र में अलिखित पंक्तियाँ पढ़ो
इतिहास माँग रहा है जंगल से सुरक्षा-व्यवस्था
अँधेरे में कैसे खत्म होगा / अँधेरे का उन्माद

१५ /
क्या हुआ चाक्षुहीन हैं धृतराष्ट्र
उन्हें देना चाहिए आदेश के प्रभावी शब्द
महायुद्ध उन्हीं के मौन का परिणाम है

चलूँ / महाराज से निवेदन करूँ
शान्ति के पक्ष में
कहूँ कि देश की रक्षा करें महाराज

नहीं / वे स्वयं बैठे होंगे
दग्ध / प्रचंड आग के समीप
पुत्र-मोह अदभुत प्रसंग है दुनिया में
कौन बच पाया है महामाया के जाल से

१६ /
अरे / ये कौन हैं
माँग रहे हैं पृथ्वी से
अपने हिस्से का प्यार-दुलार
प्यार अमर तत्व है / ब्रह्मांड में

१७ /
यह क्या
कुसमय में दिख रहा है प्रकाश
रात में प्रकाश का उठना
भयावह असगुन है

लगता है / महा पण्डित विदुर ने
बंद कर दिया है / अखंड मंगल पाठ
अब सम्भव नहीं है विश्व का कल्याण

कौन है
अरे यह कौन है
अजीब ध्वनि में कह रहा है
तेज गति से चलो युधिष्ठिर
सोच का त्याग कर आगे बढ़ो युधिष्ठिर

सभा-मंडप में बैठे असंख्य योद्धा
तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं
सब कह रहे हैं / एक स्वर में
देखो / बुलाओ / कहाँ हैं महाराज
राजा बिना कौन ले सकता है अन्तिम निर्णय

कल के युद्ध में तुम्हीं रहोगे सेनापति
बोझ-मुक्ति की कल्पना
अब सम्भव नहीं है युधिष्ठिर
धर्म का निर्वाह करो / धर्म समय का आदेश है

युद्ध अनिवार्य है
युद्ध समय की मांग है
युद्ध अब टाल नहीं सकता कोई / सुनो युधिष्ठिर

१८ /
ओह
ये तो स्वयं महाराज विदुर हैं
मंद-गति आ रहे हैं अनासक्त भाव से

चलें / चलें आप
चल रहा हूँ साथ
सोचा था / युद्ध-पूर्व सुनूंगा देर तक
प्रकृति की मौन / पीयूषवर्षी बाँसुरी
बाँसुरी महा-स्वर है / अमर संगीत

अनन्त ज्ञान-मंडित / नीति-निपुण
साधना के आचार्य विदुर ने हँस कर कहा
महाकाल का आदेश स्वीकार करो
वर्तमान सत्य है
भविष्य है शून्य-काल / अदृश्य
कृष्ण स्वयं में दिक्व्यापी वंशी-ध्वनि हैं
चलो / सुनों उनके प्रेरक शब्द

अमंगल के साथ बीत रही थी रात
आगे विदुर थे / पीछे युधिष्ठिर
जैसे सिद्धि के साथ साध्य

दोनों / धीरे-धीरे पहुँच रहे थे शिविर के पास

भूखे किस्म के लोग

जो कहें सब / क्या वही सच है
जहाँ तक चलें / तथाकथित महान लोग
क्या वही यात्रा है
अखबार से पूछो प्रचार-तंत्र की परिभाषा

उजाले में भटकता समूह देख
अंधे खुश हैं / अँधेरे में
ऐसे लोग कम हैं जो समूह का लक्ष्य समझ
गढ़ना चाहते हों नवीन वाक्य

मैं अपने तरीके से समझना चाहता हूँ
क्यों लुढ़क गयी हवा में उड़ती चिड़िया
राजनीति को अर्थशास्त्र से जोड़ देना
समाजशास्त्र नहीं है

मृत्यु को समझने में किसी भाषा
या परिभाषा की जरूरत नहीं पड़ती
हवा और पानी से जुड़ा है सृष्टि का प्रत्येक संदर्भ

हुजूर के आदेश के अनुपालन में जरूरी नहीं
कि लोग हर चौराहे पर कोकशास्त्र पढ़ें
और ऊबने पर कूद जायँ झमाँक-से / कुएँ में

प्यार और मौत का रिश्ता अजीब है
हवा में गुम होने के करीब है एक दिक्भ्रमित पीढ़ी
ऐसे में कैसे करें उपलब्ध नीतियों का गुणगान

भूखे किस्म के लोग
पेट को नगाड़ा समझ / पीट रहे हैं देह
जैसे परम्परा के खिलाफ
पेश करना चाहते हैं वीभत्स उदाहरण
कमजोर आत्मा को कहाँ-तक ढोये जर्जर शरीर

स्पर्श के उपरान्त आदमी समझ पाता है
आग-पानी और वर्फ का फर्क
परिस्थिति है जो सहज ही बता देती है
हवा छिपी है जंगल के किस अंचल में

जनतंत्र के गीत

जिन चिड़ियों का सम्पूर्ण दुनिया में आना-जाना है
उन चिड़ियों का अपना कोई देश नहीं है
केवल अगम आकाश
जो पितामह के कवच-सा सबके लिए सुरक्षित है

फिर-भी उन्हें चिंता नहीं कि संध-महासंघ
किसी अधिवेशन में निश्चित करेगा
उनके लिए / अक्षांश-देशान्तरों से युक्त एक देश
जिसकी अपनी सीमा होगी / पुराना इतिहास
अलंकृत होगा पहाड़-नदी और समुद्र से
जंगल में वर्जित होगा खतरनाक शिकारियों का प्रवेश

स्वच्छंद जीवन का परित्याग कर चिड़ियाँ क्यों स्वीकार करें
कानून और व्यवस्था का निरर्थक बंधन
आदमी पर्याप्त है पागलपन का बोझ ढोने के लिए

भौतिकता के रहस्यवाद में उलझा आदमी
एक और इमारत तैयार करने में परेशान है
यद्यपि वह अच्छी तरह जानता है
तमाम पीढ़ियाँ लुभावने सपनों के साथ हो चुकी हैं समाप्त
कल्पना से आगे / कल्पना के पीछे / अँधेरे के आस-पास
कभी / कोई इतिहास नहीं लिखा जाता

कनेर-गुलमेंहदी और गुलाब के फूलों-बीच
अनहद-नाद के तर्क पर / दिव्य भाव से
चिड़ियाँ सुना रही हैं जनतंत्र के गीत
कि जन हैं / राष्ट्र और समाज के दिव्य आधार

चिड़ियों के विशाल समूह को वायु-पथ में रोक
कौन कह रहा है आदिम ऋषि ज्यों
चलो / उन बस्तियों की ओर चलें
जहाँ दृष्टिहीन शैतान-सा / आदमी घुमा रहा है
काल का महाचक्र
बताओ / कालजयी कौन हो पाया है दुनिया में

आत्म-चिन्तन का अवसर दो / शक्ति और प्रकाश दो
सम्भव है / पक्षी-धर्म का परिचय प्राप्त कर
आदमी व्यक्त कर सके / आदमी जैसा व्यवहार

अधिकांश लोग सावधान हैं

कविता और समाज का आपसी रिश्ता क्या है
क्यों दोनों चलते हैं / एक-दूसरे के संकेत पर
इतिहास जाने कब-से देख रहा है यह खेल
पर समझ नहीं पाता
बेहतर सम्बन्ध कैसे बन जाते हैं अनायास

लोक-व्यापी यथार्थ और प्रश्नोत्तरों के बीच
असाधारण मौन-यात्रा का खास अर्थ होता है
जैसे पृथ्वी पर आकाश की अगम छाया
धूप-छाँह में / दिन-रात चलता है ग्रहों का खेल

कैसे कहा जाय
कौन चल रहा है किसके साथ
पर यह सच है कि अधिकांश लोग सावधान हैं
एक और / बेहतर दुनिया रचने के लिए

ईर्ष्याग्नि में झुलसते राष्ट्राध्यक्षों-बीच
जब-कभी आरम्भ होता है संकल्पबद्ध युद्ध
तब कविता को मजबूरन पूछना पड़ता है
राजा के मुख्तारों-सिपहसालारों से
कि फूल और धूल का फर्क कब मालूम होगा उन्हें
अँधेरे के विरुद्ध एक दिन खड़ा होगा वृहत्तर समाज / स्वयं

कविता के संकेत पर उठ पड़ते हैं अचानक
तमाम लोग / खोल देते हैं व्यवस्था की पोल
सूर्योदय का अर्थ तब समझ पाता है इतिहास

जैसे-जैसे आ रहा है कठिन समय सामने
लोग उठा रहे हैं विचित्र किस्म के प्रश्न
यद्यपि उनमें किसी तरफ से
हवा बदलने की क्षमता नहीं होती
पर सवाल है / सवाल उठेंगे हरदम / भीड़ में

कविता अमीरों के महल में
सितार और तबले की ध्वनि पर उठने
मन बहलाने के लिए तैयार नहीं है अब
वह उनके साथ है / जो लगातार जूझ रहे हैं
समाज को नया आकार / अभिनव संदर्भ देने के लिए

उस तरफ देखते रहो

महादेश के लोगो

महादेश के महानगरों की ऊँची इमारतों में
मौज-मस्ती से रहने वालो
जनता की भीड़ के सामने झूठे बयान जारी कर
भाषा के वसूलों को तोड़ने वालो

तुमसे अच्छे हैं बंजारे / मछुवारे
जांगलिक संस्कारों में पल्लवित / लकड़हारे

जो पर्वत / समुद्र
तिमिरस्नात असहज तट-बंदों में
अशरण-द्वीप का निर्माण कर / थके यात्रियों
भ्रमरत भिक्षु को बुलाकर देते हैं शरण

उन सब को उस नाटक का आरम्भान्त मालूम है
जिसकी तहत / आणविक अस्त्र तैयार कर
लोग जारी कर रहे हैं
गरीबी समाप्त करने के संदर्भ में फर्जी घोषणा-पत्र

मछुवारे / छल-प्रेरित शब्दाघात
भाषिक सांध्यता के अन्तहीन क्रम से परिचित हैं
वे जाति / देश या धर्म के बारे में / सवाल नहीं उठाते
यह भी नहीं पूछते
ऊष्ण कटिबंध में शीत युद्ध क्यों चल रहा है
सिर्फ परखते हैं / आदमी होकर जीने की हैसियत

द्वीप के सम्पूर्ण दायरे में ऐसा कोई नहीं
जो कंधे पर बंदूक धरे / गुर्रा कर डपटता हो
रेल की पटरी उखाड़ने के जुर्म में
तुम्हें कैद किया जाता है / केवल सात वर्ष के लिए
चलो / जेल के भीतर समझोगे
शब्दों का असली तात्पर्य

वे भाषा को घिसकर नकली अर्थ निकालने
अखबारों में छपते रहने के पक्ष में नहीं हैं
शब्द वही सार्थक हैं / जो पसीने की तरह चमकते हैं
सार्वजनिक व्यवहार में

फिर काम चलाऊ शब्द क्यों गढ़ लेते हैं कुछ लोग

महादेश के वंदनीय लोगो
महानों के बीच महान लोगो / आदर्श नागरिको
चुप क्यों हो / बताओ / समझाओ कुछ देर तक
कि आदमी और आदमी के बीच
क्यों चल रहा है जंगल का कानून
लूकी छुआ हर तरफ आग लगाने का उपक्रम

चलो / क्यों नहीं चलते उस द्वीप की ओर
जहाँ सुखद भविष्य के नाम लोग गढ़ रहे हैं
सहज शब्द / सार्थक स्वप्न
इन सपनों के बीच-से उभरेगा देश का सही मानचित्र

भाग्य कहाँ है उनके साथ

बोझ ढोते रहने के अलावा कुछ-भी शेष नहीं है

जीवन से अधिक भयावह
क्या / कोई और बोझ सम्भव है / दुनिया में
जब कहो चुप / जब पूछो चुप
चुप रहने का संस्कार समाज के पक्ष में नहीं है
विवश / एक दिन बोलना ही पड़ेगा / सब को मिलकर

किनसे पूछूँ भाग्य का सवाल / राशि-फल
ग्रह-नक्षत्रों का अनन्त आध्यात्म
भविष्य का संदर्भ हर दूसरे क्षण बदल जाता है

किस ज्योतिषी की तलाश में परेशान है
भिखारियों का व्याकुल समुदाय
जबकि उन्हें मजबूरन / रोज दौड़ना-ही पड़ेगा
तमाम दरवाजों पर / भाग्य कहाँ है उनके साथ

अमीरों की बस्ती में कुछ लोग अक्सर दिखाते हैं
भाग्य का सार्थक परिणाम
माँग में सिंदूर भरे / उतावली औरतें पूछती हैं / दौड़कर
कमर का दर्द अचानक क्यों बढ़ गया है

झोंपड़ों के पास खड़े मजदूर पुकारते हैं / अनासक्त
मुझे प्यार दो / शताब्दी का अर्थ और संकल्प

पैरों से लिपटे सर्प जकड़ चुके हैं सम्पूर्ण देह
हमें लगातार ठेलने में जुटा है पूरा समाज
अंधकूप / मृत्यु की ओर
क्या आत्महत्या से बचने का उपाय सुझा सकता है कोई

लोग उखड़े-से / आवेश में गरज कर कहते हैं
निराश व्यक्ति समय का अर्थ नहीं समझता
गौर से क्यों नहीं देखते
बर्फीले तूफान-बीच
आदमी किस तरह करता है जीने का अभ्यास
समझ लो / साँस लेने का तरीका

बड़बोलों के शब्द सुन / मैं दर्पण में बार-बार देखता हूँ
खुद का चेहरा / चेहरे पर काली छाया
फिर सोचता हूँ / क्यों न फेंक दूं कंधे पर रखा बोझ
बोझ मुक्त आदमी-ही गा सकता है आजादी के गीत

जनतंत्र चलेगा सरपट

राष्ट्राध्यक्ष ने गहरे सोच के उपरान्त आदेश दिया
आजादी का पर्व धूम-धाम से मनाया जाय
आदमी के साथ जानवरों को
खास कर / भेड़-बकरियों को शामिल किया जाय
जुलूस-कार्यक्रम में
जनतंत्र में भाषा से ज्यादा आवाज का महत्व है

लोग विचार करें / दिल खोल कर समझें
कि आदमी और जानवर के बीच का ऐतिहासिक फर्क
समाप्त है अब / जनतंत्र चलेगा सरपट
तेज रफ्तार में

बताओ / फिर कैसा जनतंत्र / ही-ही ही-ही

वैसे इक्कीसवीं सदी के अनुकूल भाषा की तलाश जारी है
चालू शताब्दी के अन्त तक
हम निश्चय-ही पा लेंगे / मनचाही भाषा
दुम हिलाकर मिमियाना भी भाषा का मौन संदर्भ है

सम्मानित सदस्यगण / कुर्सियों पर बैठा समूह
राष्ट्राध्यक्ष के बयान से संतुष्ट है
अनुशासन का सही और व्यावहारिक पाठ पढ़ाने का
कोई और तरीका हो भी नहीं सकता
बूझें / बूझ कर सचेत हों / देश के दिव्य नागरिक

तन्नाये गधे को पिछली टाँग के बल उछलता देख
अब कोई न हँसेगा / न ठानेगा व्यर्थ का मजाक
लोग गम्भीरतापूर्वक सोचेंगे
मुँह बनाने / तन्नाकर उछलने का कारण

लो / अब सही अर्थों में हम होने चल रहे हैं आजाद
भोजन की समस्या आज है / कल नहीं
चरें / दूर तक चरें लोग / चरागाह अनन्त है

गड़गड़ाती तालियों बीच महामहिम ने उछल कर कहा
हम एक हैं / एक रहेंगे हरदम
फिर लोग क्यों जूझ रहे हैं अर्थहीन स्थिति में / शब्दों से

जो लोग सड़क-चौराहों पर नाधे हैं उपद्रव
वे वापस लौट / खुद के घरों में छेड़ दें जंग
हर घर में लड़ाई छिड़ने से जनतंत्र का रंग और साफ होग

होता रहा यही सब / कई दिन / कई माम तक
अचानक / लोगों ने देखा / जनतंत्र और समाजवाद
दोनों एक साथ कूद गये हैं नदी में
शुरू है देश में / आत्महत्या का विचित्र प्रसंग

हो रहा है वही / जो होता है। जानवरों के गाँव में
काली भैंस चोकड़ती है अफसोस में / सुबह से दोपहर तक
फिर लौट कर पसर जाती है / राजधानी के बीचोबीच
उस सड़क पर / जो जाती है संसद की ओर

केवल आकाश है उसके साथ

रामलाल जाने कहाँ से भटक कर आया है शहर में
कहता है / जमालपुर / जिला जालौन का रहने वाला हूँ
छोटी-मोटी कोई भी नौकरी मिल जाय
मानों डूबते को तिनके का सहारा मिल गया बाबू

कठकरेजी भेड़ियों की भाषा मुझे नहीं मालूम हुजूर
गरीब हूँ / अनपढ़ हूँ / गाँव में रहता हूँ
क्या जानूँ शब्दों का मरौता
सहज भाषा मैं समझता हूँ अच्छी तरह
पर दिल खोलकर
उसका इस्तेमाल यहाँ कोई नहीं करता
कतरते हैं बारीक शब्द / जैसे सुपारी का टुकड़ा

नौकरी की तलाश में ठोकरें खाता जहाँ भी पहुँचता हूँ
लोग जाने क्यों शुरू कर देते हैं
घूर कर देखना
संकेतों में सुझाते हैं / खिसक लो / कहीं और चलो
बात करने की फुर्सत नहीं है मेरे पास

बाबू ! तब अनायास सोचने लगता हूँ
देश में अधिकांश लोग कत्ल के पक्ष में हो गये हैं
कैसे गुजरेगा शेष जीवन
मेरा या देश का
क्योंकि दोनों के अस्तित्व में खास फर्क नहीं है

भाई रामलाल / तुम कैसे समझोगे इस दुनिया को
हँसमुख किस्म के ठगहार बैठे हैं / शहर-मुहल्लों में
मौज-मस्ती में तौल रहे हैं आदमी की जिंदगी
इनसे कोई नहीं पूछता तुम किस काम में लगे हो दिन-रात

घनी आबादी वाले इलाकों में कुछ ऐसी जगहें हैं
जहाँ हर वक्त भेड़ियों का झुंड / मृदंग बजा
भूखे राहगीरों से कहता है खून दो / तब आगे बढ़ो
जंगल का कानून सर्वत्र एक-सा चलता है

रामलाल ! देश में नौकर बहुत हैं / किन्तु
नौकरी कहीं नहीं दिखती
शहर और भी थे / यहाँ कैसे आ फंसे तुम
राजधानी में केवल राजा के पहरेदारों का बोल बाला है

रामलाल एक देश है / जो उदास मन / थका हारा
भटक रहा है / अनचाही जगहों पर
शहर नहीं / कोई नहीं / केवल आकाश है उसके साथ

कविता—१

राम औतार ! कुछ देर के लिए छाया में आ जाओ
जमीन और हवा / दोनों में आग जैसी जलन है
देखो / धूप में सरकता साँप किस तरह छटपटा रहा है
प्यासे मेमने दौड़ रहे हैं / ताल की ओर
पृथ्वी है कि मौसम को झेलकर भी शान्त है एकान्त में

क्या कहा / फिर कहो एक बार
ऐसे में सुनोगे कविता / मजेदार कविता / श्रम का अर्थ
सुनाऊँगा / जरूर सुनाऊँगा / असरदार कविताएँ
कविता रोशनी है / रोशनी को साथ लेकर चलना चाहिए
खास कर तब / जब हर तरफ अँधेरा छाया हो

इधर / मैंने मशीन और आदमी के बारे में बहुत लिखा है
कविता में सार्थक शब्दों की फिटिंग देख खुश होगे तुम
शब्द हैं कि मशीन को भी
दुरुस्त करने की ताकत रखते हैं भरपूर

सूरज की तीखी गर्मी से छटपटा कर
कहा राम औतार ने / देखो / गौर से देखो सामने की ओर
कौवा मेढक को नोच रहा है / नोच कर खोंच रहा है
जैसे भैंस / हरी घास को चरेरती है थूथुन से
चीख से जाहिर है / मेढक अभी जिंदा है
क्योंकि उछल रहा है जैसे गेंद / अस्तित्व की सुरक्षा में

क्या तुम इसे असाधारण हत्या का प्रसंग नहीं मानते

सुनाओ / इसी संदर्भ में सुना दो एक कविता
चीख / भाषा से अलग होने की अन्तिम व्याकुलता है

बंजारों से कविता सुने हो कभी / जरूर सुनो आदिम राग
वे लगातार चल रहे हैं / इतिहास के साथ
समाज का वास्तविक चित्र उभार देना
फिर शब्द-मुख पर रख देना / असाधारण घटना है अर्थशास्त्र में

मैं खामोश / देखने लगा था राम औतार का चेहरा
सोचा / पसीना बहाये बगैर नहीं मिल सकती कविता
भाषा के करीब होने / कंठ खोलने पर
हर मजदूर को स्वतः मिल जाता है / रचना-धर्म का अगम संस्कार

कविता—२

कुदाल को ठोक कर जमीन पर रखते हुए
राम औतार ने कहा / लोग जाने क्यों
आदमी को मशीन का पुर्जा समझ लिए हैं
उठा कर रख देते हैं / धौंस पर धौंस
तन-मन और दिमाग पर

बताओ / गर्म और ठंड का असर
किस पर नहीं पड़ता
देह तोड़ने / मेहनत के बावजूद
सब कहते हैं कामचोर / पलायनवादी
यानी आदमी / आदमी नहीं / जंगल का जानवर है
फिर भी / चलो बैठ लेता हूँ तुम्हारे साथ / छाया में

आज के दिन / तुम यही बता दो भाई
देश में कितने कवि हैं
जो कविता के फौलादी तेवर को समझते हैं भरपूर
होंगे / जरूर होंगे / किसी एकान्त में
वैसे / इधर मुलाकात नहीं हुई / किसी जबरदस्त कवि से

शब्द गढ़ने की कला से परिचित नहीं हूँ मैं
इसीलिए कविता के बारे में नहीं दे सकता
देर तक / प्रामाणिक तर्क
वैसे / साधारण को असाधारण तक पहुँचा देना
कविता का लक्ष्य है

हमारे बीच कुछ लोग हैं
जो जीवन्त काव्यधारा को धोखा देने की साजिश में हैं
आयातित विचारों ने बढ़ा दिया है / कविता का खतरा

सामाजिक स्तर पर / कविता में क्रान्ति लाने का समय
आ चुका है / बिल्कुल समीप
फिर उसे सार्थक हथियार बनाने में क्यों चूका जाय

लो / एक साथ उठा दो / हजार-हजार हाथ
कविता पराजय के खिलाफ है

मजदूर हूं / मुँहलगा हूं / इसलिए कहता हूं
श्रमिक के हाँफने / सुस्ताने का अर्थ
समझता है कवि / केवल कवि
जो कविता की चमक को देखता है पसीने की बूंद में

कुछ कहो हम गरीबों के बारे में / महादेश के लिए
समझो / गरीब लगातार देख रहा है कवि की ओर
ऐसे में चुप रहना अच्छा नहीं लगता / मेरे भाई
कविता की एक पंक्ति सुन जाग सकता है / सम्पूर्ण देश

कौन पढ़े अखबार

अन्त में उसके खिलाफ माहौल तैयार कर
अखबारों में उछाली गयीं / खतरनाक खबरें
कि वह समाज का अर्थ नहीं समझता / षडयंत्रकारी है
उसकी आवाज सुन मुलायम कुर्सियों पर बैठे लोग
चिहुँक कर गिर जाते हैं / उतान
दिल के दौरे के नाम उन्हें भेजना पड़ता है अस्पताल

उस आदमी के चेहरे पर उम्र का असर बिल्कुल न था
विरोधी छिप जाते हैं बहाने से / झाड़ियों में
जैसे नेउर को देख तड़प उठता है साँप

सात मंजिल मकान के सामने / खड़े हैं कुछ लोग
बक रहे हैं उनके नाम / भद्दे किस्म की गालियाँ
कि इसके रहते संकट से मुक्त नहीं है जीवन
अंकुशहीन आदमी कुछ भी कर सकता है / किसी क्षण
फिर वे जपने लगते हैं कल्याण-वाक्य

हुआ वही जो होना चाहिए पंचायती व्यवस्था में
हंगामी बैठक में शब्दों को साफ कर
कहा गया / जोर देकर
गम्भीर राष्ट्रीय समस्या के बहाने
जनता को ले चला जाय किसी और रास्ते पर
तब इस आदमी का साथ छोड़
सब नाचेंगे देश-प्रेम के नाम / कई साल तक

सामाजिक आंदोलन दबाने का यही सहज मार्ग है

सुबह होते / सचमुच छपने लगीं खबरें
भर गये अखबार
कि सीमा पर दूर तक खड़ी है दुश्मन की फौज
मुँहतोड़ जवाब देकर बताया जाय / हम सावधान हैं

गरीब नहीं समझ पाता / क्या हो गया देश को / रातो-रात
वह शहर के चौराहे पर बेचता है
चार आने में तीन मूलियाँ / पाँच पैसे में हरी मिर्च
बीच-बीच में हँसता है भीड़ देखकर

साँझ हुए पूछता है खड़ी उरद / अरहर के दाम
इसके बगैर नहीं चलता घर का काम
राम जाने कौन तै करता है बाजार-रेट

आजादी मिलने के इतने दिन बाद भी
वह मुक्त नहीं हो पाया है / रोजी-रोटी की समस्या से
फिर कौन पढ़े / क्यों पढ़े अखबार
कि समझे / हिन्दुस्तान किधर खड़ा है दुनिया की भीड़ में

जनता की लड़ाई है

रात के आखिरी पहरे में वह जाने कहाँ से आ गया
अपने समूह के बीच / धूप में छाया बन
उदास चेहरों पर बिछी सलवटें देख / उसने कहा
क्रान्ति के उपरान्त समाज इस तरह बनता है / जैसे
लोहा गलने के बाद सख्त औजार
खूनखोर प्रार्थना से नहीं / संगठन से घबड़ाता है

ऐसा नहीं कि मेरे न होने पर लड़ाई खत्म हो जायगी
आग है / आग धधकती रहेगी युगों तक
वक्त आने पर विरोधी जल जायँगे / तिनके की तरह

प्रकाशित अग्नि-शिखा लेकर / तुम सब चलते रहना
तब-तक / गुम-सुम बैठे लोग चिल्ला न पड़ें जब-तक
ले-लो अपना हिस्सा / जो कुछ है मेरे पास
युगों से तहखानों में बंद

समझो / वक्त आने पर शैतान उड़ जाता है / कब्रगाह से

देखो / सामने की पहाड़ियों की ओर देखो
लोग गर्दन झुकाये बड़ी उम्मीद से देख रहे हैं
तूफान की रफ्तार
उन्हें विश्वास है / बर्फ के नीचे से निकलेंगी
आग की सिल्लियाँ
आग दबी नशों को उभार देगी / क्षण-मात्र में

धुएं से परेशान / कोयल के सुकुमार बच्चे
अँधेरे में ताक रहे हैं दूरस्थ / समुद्र का किनारा
उड़ान भरने में कौन देगा व्याकुल पंख को सहारा

सुरजन भाई / आओ / तुम्हें आखिरी सलाम दे-दें
सुबह जब आक्रोश में मार्च करेंगे / मजदूर
ये मारक हथियार तब होंगे तुम्हारे कंधे पर

ये कौन हैं जो माँ और देश का नाम ले / रो रहे हैं लगातार
इन्हें दौड़कर बता दो / समझा दो / मेरे भाई
देश का भविष्य इनके साथ होने के बिल्कुल करीब है
रोते हैं वे / जो दिन-रात हथेलियों पर सिर धरे सोते हैं निश्चिन्त

मैं रहूँ न रहूं / क्या फर्क पड़ता है
जनता की लड़ाई है / जीतेगी जनता
सच के साथ कौन कर पाया है अनर्थ का व्यवहार

देश के महान लोगो

जनता को मालूम है / रोटी न देने की साजिश में
कौन लोग शामिल हैं
कैसे गरीबों के पक्ष में योजना तैयार कर
धीरे से खिसका देते हैं / अमीरों की ओर
शब्द पेरते / संक्षिप्त बयान के साथ

देश के महान लोगो / कुछ दिन मौज करो और
भविष्य में जाने क्या होगा / समाज का हाल
जो दबे हैं दबे रहें / सोये हैं सोते रहें
जगाने की फ़ुर्सत कहाँ है हमारे पास

अखबारों में आये दिन छपते हैं महत्वाकांक्षी बयान
अगली योजना तक कोई न रहेगा कंगाल
जरूरत की चीजों पर सबका समान अधिकार है

लेकिन जनता / देश की बेचारी जनता को मालूम है
अभी उनके हक में / ऐसा कुछ न होगा / अगले कई वर्ष तक
खतरनाक हरकतों में पले शब्द खो जाते हैं हवा में
चालबाज मच्छर की तरह

रोटी मिलने पर सत्ताधीशों का कौन करेगा गुणगान
आवाज देने पर गरीब ही आता है भीड़ बनकर सामने
जनतंत्र के अस्तित्व का सवाल जुड़ा है भीड़ से
भीड़ में जो चाहो / कर लो / जैसे अँधेरी रात में

जनता / जब-कभी दौड़ कर पूछना चाहती है
जनतंत्र और आदमी के रिश्तों पर कोई सवाल
या अनैतिकता का जन्म कैसे हुआ / मेरे हुजूर
इस खूबसूरत दुनिया में

तब वे / कमर तक धोती की लांग उठा कहते हैं
भाई / ऐसा कुछ नहीं है फिलहाल
जिसके लिए व्याख्या की मांग की जाय
आवश्यकता के समय खुद समझ लोगे
कैसे सार्वजनिक मंच पर / गर्म सवालों का उत्तर
रखा जाता है / असरदार शब्दों में

कोई उठा दे मुझे

यह सच है कि जीवित हूँ / हवा में खामोश आवाज की तरह
बाहों का सहारा दे / कोई उठा दे मुझे
राहत में लेना चाहता हूँ साँस
पता नहीं कब-तक कायम रहेगा / अस्तित्व का संघर्ष

ऐसा नहीं कि मैं पहली बार गिरा हूँ धुंध में
पत्थरों की मार से / आहत होकर
लोग अक्सर तैयार कर देते हैं / खतरनाक घेरा
जैसे तमाम परिस्थितियाँ खिलाफ़ हो चुकी हों / एकाएक
संयोग है कि इस बार सुरक्षित हूँ / धमाकों से
देख रहा हूँ जमीन का रंग

उस आदमी के भीतर अगम विश्वास का बनता महावृत्त देख
मैंने कहा / तुम्हारे मन में अब-भी धधक रहे हैं अनगिनत शोले
उठो / पेड़-पौधों के बीच दूँगा तुम्हें / जिंदगी का नया अर्थ
इंसानी बस्ती के नजदीक पहुँच / खुद महसूस करोगे
कैसे अँधेरे की छाती तोड़ / फैलता है प्रकाश

पुराने शब्दों को अलग कर / सशक्त भाषा को जन्म दो
व्याकरण के झमेले से मुक्त वाक्यों का इस्तेमाल करो
जंगल से घिरे लोग जाने क्यों नहीं समझते
एक-दूसरे का बयान
मैं नहीं चाहता / पत्थर बीच घिसते रहने का क्रम जारी रहे
कुछ दिन और
इतिहास कभी-तो आयेगा / हाथ जोड़कर / सामने

छतनार पेड़ों की टहनियों पर रो रहा है पक्षियों का समूह
बेमौसों में फेंटार होने की सम्भावना प्रबल है
किसी-भी क्षण उछल कर वह दे सकता है / धोखा

देह में दर्द उठने के बावजूद वह चाहता है
अँधेरे से दूर रहना
किन्तु अँधेरा उसे इतना अधिक दबोच चुका है
कि वह खुद के चेहरे को पहचान नहीं पाता

मैं / उसकी तरफ दौड़ने के साथ लगातार चिल्लाता हूँ
पर / उसके कानों तक नहीं पहुँच पाती आवाज
केवल भेड़िये हैं जो उछल कर / चारों तरफ दे रहे हैं पहरा

वह आदमी बोला नहीं

दर्शक-दीर्घा से चिल्लाकर जब उस आदमी ने कहा
गला दाब कर हत्या करने का सम्बन्ध भाषा से नहीं होता
भाषा को बदनाम करने का प्रपंच समाप्त किया जाय
बताया जाय / किन सफेदपोशों ने मिलकर
एक अच्छे-भले आदमी को अनायास / बनाया है लाश

ये शब्द सुन वे झुंझलाहट में बोल पड़े / हे राम
यह आवाज किसी बम से ज्यादा घातक है
अभिव्यक्ति पर नियंत्रण के लिए जरूरी है
संविधान में संशोधन किया जाय / तत्काल
बाचाल समूह से निपटने के लिए और क्या विकल्प है
सदन या मेरे या देश के पास

आखिरकार हुआ यही / वह आदमी कैदी की हैसियत में
पहुँच गया / केन्द्रीय कारागार के भीतर
जहाँ मुँह बिराते तमाम लोग खड़े थे / पहले से

उसे देखते-ही कैदियों का समूह हँसकर पूछने लगा
क्या सचमुच तुम्हें भाषा का प्रयोग नहीं मालूम
यहाँ / इन दिनों / प्रायः वही लोग आते हैं
जिन्हें / जनहित में तल्ख भाषा का विधिवत ज्ञान है
लाचारी है तुम्हारी / हमारी भी
कैसे कहा जाय कोयल को कौवा / जबकि भोर में
वह सुना रही है / मीठे गीत

भयात्मक भाषा में हाँके जाते हैं / जंगल के जानवर
उड़ायी जाती हैं / डाल पर बैठी चिड़ियाँ
किन्तु आदमी / वह कैसे मान सकता है
भाषा का घुमावदार रास्ता
मन मुताबिक भाषा रचना दमदार आदमी का धर्म है

वह आदमी बोला नहीं / हँसने का सवाल भी न था
चुपचाप चला गया सीकचों के भीतर / यह सोचता
भारी संख्या में आदमी बैठे हैं यहाँ
मजबूरन / साँस दाब कर
ऐसे में गर्म मौसम का आना कौन रोक सकता है

भाषा के मुद्दे पर तैयार हो रही है कविता
जागेगा मजदूर / सुनेगा किसान / ललकारेगा जवान
समझो कि उसी क्षण सम्हलेगा / देश का हर इंसान

शब्दों को समझना जरूरी है

अभी कुछ लोग हैं

मैं उन पेड़ों के बीच यात्रा जारी रखने के
पक्ष में नहीं हूँ
वहाँ अवसर की प्रतीक्षा में सिर झुकाये बैठे हैं
कनमनाये-से कुछ लोग
परख रहे हैं बीहड़ों में पनप रही संस्कृति का अर्थ

मौका मिलने पर वे तुरन्त कर सकते हैं वार
जंगल में तब कौन सुनेगा
अकेले आदमी की आवाज / धैर्यहीन शब्द
सोचता हूँ / सोच कर बटोर लेता हूँ पैर
यद्यपि अनायास तन जाती हैं हाथ की मुट्ठियाँ

जिस जमीन पर घनी-घनी / हरी-सी घास है
उस दायरे में प्रतिक्षण दिखते हैं
क्रुद्ध मुद्रा में उछलते साँप
दूर टीले पर निश्चिन्त भाव से गुर्राता है
परम सक्रिय दंतहीन वृद्ध शेर

चरागाहों में देर तक रोकर चुप हो गये हैं
हिरन के मासूम बच्चे
अनिद्रा की हालत में रात भर फेकरते हैं शृगाल
भय की भाषा में मुरझाये फूल सुनाते हैं

विष का अर्थ / मृत्यु-संदर्भ का आख्यान
नागिन-बाँसुरी में उठ गया है सपोलों का विश्वास
गजब की महतारी है / निगल जाती है निरीह संतान

मुलायम घास पर लोटने का वह सुख
जाने क्यों अब नहीं मिलता
जो सहज-ही प्राप्त था कुछ दिन पूर्व तक
भविष्य के संदेह में काँप रहा है आग्रहमुक्त चरागाह
पता नहीं कब कौन शुरू कर दे
अवांछित अघोषित युद्ध / एक और करामात

धूल भरी आँधी में जंगल-जीवों को बटोर
कोई दे रहा है प्रेरक वक्तव्य
सार्थक शब्द चमकना शुरू कर दिये हैं
कमजोर आँखों के दायरे में

जंगल ने कब सोचा था
कि भेड़ भी तोड़ सकते हैं मजबूत चट्टान

चलो / दूर पड़ी उन सिसकियों के पास चलें
जहाँ चावल पकाने की चिंता में खड़ा है
वस्त्रहीन भूखा आदमी
अभी देश में कुछ लोग हैं / जो रोटी को रोटी
या बंदूक को बंदूक कहने के लिए तैयार हैं सहर्ष

क्योंकि जनतंत्र भाषा का खेल है

पूछो / मैदान में जमी भीड़ से पूछो
कोई वात है कि लोग बिचका रहे हैं मुँह
दिखा रहे हैं चेहरे पर जमी धूल

जनता क्यों चिल्लाती है खतरों का नाम लेकर
जहाँ देखो / हड़ताल अनशन या जुलूस
छीना-झपटी में चल रहा है अविराम शीत-युद्ध
जनतंत्र को समझने में असमर्थ है जन-मन

जनतंत्र कब हरा होता / कब सूख जाता है
मौसम भी नहीं समझ पाता आगामी परिवर्तन का कारण
वैसे किसी भी क्षण आ सकता है प्राणघातक तूफान

व्यवस्था की समस्या पर कई दिन से चल रही है बहस
सब चुप हैं / केवल तीन सदस्य वोलते हैं पारी-पारा
पीठासीन व्यक्ति किताबें उलट कहता है जोर से
जनता को तोड़ने के लिए बनाये जायँ कुछ कानून
पकड़ मजबूत होने पर सब चिल्लायेंगे जैसे प्यासी भैंस
अनुशासन-ही न रहा तो क्या करेंगे हम बैठकर

भाई मुरारीलाल कन्ने मन्ने चवन्नी लाल
सब जोश में उठते / फिर काँछ बाँध बैठ जाते हैं चुपचाप

जाने क्या बात है कि उठते ही खत्म हो जाता है जोश
जैसे तांत्रिक महामंत्र का भूत सवार हो सिर पर

सब-के-सब / सिर झटक गुनते हैं बुनते हैं विचार
जब-तक बैठे हैं आसन पर / कुछ कर लें
धर दें परिवार के लिये
अँधेरे को अंधेरे में समझ पाना मुश्किल है

सदस्यों के चेहरों को देखकर एक आदमी चिचियाता है
इस मुद्दे पर बहस चला पाना फिलहाल कठिन हो रहा है
कुछ लोग भाषा की तलाश में छटपटा रहे हैं देर से
खोज लें भाषा
क्योंकि जनतंत्र भाषा का खेल है

रोटी

मैं भाषा से ज्यादा रोटी को महत्व देता हूँ
क्योंकि रोटी बगैर भाषा का जन्म नहीं होता ।
जनतंत्र के अधिकांश पाठ पढ़ चुकने के उपरान्त
जब मैं उठाता हूँ रोटी का सवाल
या दीवारों पर लिख देता हूँ रोटी-रोटी-रोटी
चालाक लोग तब गनगनाती आवाज में चिल्ला पड़ते हैं
संतुलित भाषा का इस्तेमाल करो
प्रत्येक स्थिति में प्रसन्न रहने का आभास दो

क्रियापदों से मुक्त सार्वनामिक संस्कृति में पले लोग
पसोपेस की हालत में सोचते हैं
कि देश में ऐसे तमाम लोग मौजूद हैं
जो लोकतंत्र के व्यावहारिक पक्ष से परिचित नहीं हैं
शिष्टाचार की जगह पीटते हैं बे-मेल तालियाँ

ऐसे लोगों से मैं कैसे कहूँ कि मास्टर इकराम अली
दिन में चराते हैं बकरियाँ / चुगाते हैं मुर्गियाँ
जबकि उन्हें स्कूल में पढ़ाना चाहिए किताब
देखना चाहिए इतिहास-भूगोल / भाषा का उलट-फेर
मुंशी विनायक लाल पहले पीटते हैं गणित के नाम
फिर बच्चों से माँगते हैं गन्ने का ताजा रस
किताब के पन्ने बे-मतलब उड़ते हैं हवा में

जैसे भिक्षुक-गृह के वार्ड पर
भिखारियों के फटे वस्त्र / झोंझ पर कतरन के छल्ले

शिक्षा के साथ अजीब तरह से चल रहा है मजाक
कौन सोचता है गरीब बच्चों के संदर्भ में
जो अक्सर फुटेहरा टगुराते पहुंच जाते हैं स्कूल

सोचो
क्या यह सब रोटी से जुड़ा सवाल नहीं है

डेढ़ रोटी में सात प्राणी
कौन कितना खाये
रोज / सोने से पहले बच्चे पा जाते हैं तमाचा

बाजार गर्म है

उन सावधान चेहरों को ठीक से देख लो / परख लो
जो चीजों के एक दाम बता चुपाई मार लेते हैं
खुजलाते हैं रोएँदार पीठ और मोटी हथेलियाँ
बाजार गर्म है / बाजार गर्म रहेगा हरदम

काली सड़क के बगल में बैठा मिलता है अजीमुल्ला
सिर झुकाये / चाहे सुबह हो या शाम
जिस जूते को गाँठ कर वह टाँक दे
क्या मजाल राह चलते उखड़ जाय तल्ला
फिर भी लल्ला आना-कानी करते हैं पैसा देने में

मौज में होने पर वह कहता है प्यारी औरत से
शहर जितना बड़ा है / लोग उतने ही छोटे हैं
क्या करूँ / कहाँ जाऊँ / धंधें का मामला है
धीरज धरो / अच्छे दिन कभी आयेंगे जरूर

बाजार में गेहूँ नमक और चमड़े का दाम सुन
अजीमुल्ला चौंक कर उछलता है / काँखता है कई बार
या खुदा कैसे चलेगा आठ पेटों का खर्च
जमीन है कि चल रहा है लेटने का काम

सोना-चाँदी खरीदने में परेशान हैं धनी
एक है अजीमुल्ला कि बीस बार देखता है मसूर की दाल

तीस बार पूछता है दाम / पैंतीस बार हूं-हूँ
उदास मन पांच किलो गेहूँ लिए लौटता है
झोंपड़े की ओर

पूछो कि बुढ़ाई में इतनी मेहनत क्यों करते हो
तब सिर उठा वह देगा जवाब
क्या करूं बाबू ! पेट से लिपटने के लिए
रात-दिन चमड़े को चमड़े से जोड़ना ही पड़ता है
कौन है जो मुफ्त में देगा जरूरत की चीजें

अजीमुल्ला कोई दार्शनिक नहीं है
वह नेता अभिनेता भी नहीं
केवल हिन्दुस्तान का साधारण नागरिक है
जो कहता है
सोच-समझ कर कहता है
फिजूल बातों के बेहद खिलाफ है अजीमुल्ला

नहीं हुजूर

जंगल में टहल रहे निडर सपोलों को देखने
उपचार करने के बाद
उसने सूखी डाल काट रहे आदमी से कहा
विकृत लाश कहीं और भी रख सकते थे तुम
नंगी लाश देख नाराज हो सकता है समाज का एक वर्ग
क्रुद्ध समुदाय पर नियंत्रण रख पाना आसान नहीं है
हिफाजत से रखी चीजें भी टूट कर बिखर जायँगी जमीन पर

नहीं, बिल्कुल नहीं हुजूर / एक साँस में वया कह गये आप
हम कानून की खिलाफत में कदम बढ़ाने वालों में नहीं हैं
वे और हैं जो रंगीन पतंग देख बजाते हैं तालियाँ
कुछ देर में हम चले जायँगे घाट की ओर
कैसे कहूँ मेरे मालिक कि हम वक्त के मारे हैं
क्रमिक हत्या के वावजूद कोई नहीं लेता हमारी खबर

घरों में विदेशी सामान रख जो दरवाजों पर डाल दिये हैं परदा
उनसे कोई नहीं पूछता गुप्त अपराध की कहानी
निजी स्वार्थ में वे पीस रहे हैं / एक भरा-पूरा समाज

लाश को कंधा देते हुए सतर्क जवान ने उमस कर कहा
हम ईंट पर ईंट बिछा सम्हाल देते हैं गिरती दीवार

बसा देते हैं उजड़ा देश
किन्तु रसोई तैयार होते ही किन अपराधों के तहत
हमें कर दिया जाता है बाहर

मजदूर जी-जान लगा फैक्ट्रियों में बनाते हैं कीमती सामान
किन्तु पैसे के नाम उन्हें मिल जाता है जुल्म का झटका
अखबार हैं / बक देते हैं कि धूम-धाम से चल रहा है समाजवाद

आत्मरक्षार्थ जब पहुँचता हूँ तुम्हारे महल के सामने
अंगरक्षक घूरकर भगा देते हैं तत्काल
तब कलेजे पर छनकते शब्द भाप बन उड़ जाते हैं अपने-आप
सम्भव है वहाँ पहुँचने पर संतरी सुलेमान खुद बता दे
हम-सब की करुण कहानी

तब / वह आदमी भौचक्का-सा देखता है चेहरों पर बिछी धूल
फिर देर तक सोचता हैं देश को मजबूत करने का तरीका
ओह / कुछ सपोले अभी सुरक्षित हैं मैदान में
इन्हें कैसे समाप्त किया जाय
इतिहास सुरंगों के बीच छिपने की कोशिश नहीं करता

आग

हे भाई ! आग को सुरक्षित रखने की कोशिश करो
उसे गीली मिट्टी के स्तर तक बुझा देना ठीक नहीं है
आग महाशक्ति है / आत्मसिद्ध मंत्र
सुना है कभी उस महामंत्र का दिक्व्यापी घोष
इतिहास जाने कैसे बदल देता है घटनाओं का क्रम

मुसीबत के क्षण धीमे से सुलगा दो
आग चमकेगी / अँधेरे में तुरन्त फैल जायगी रोशनी
फिर देखो / धुंध में कैसे डूबता है कोई देश
रोशनी में नहाया देश अंधकार से भयभीत नहीं होता

राख के अम्बार के बूते किसी राष्ट्र का निर्माण नहीं होता
आग है जो हर चीज में ठसक कर भर देती है ऊर्जा
ज्वालामुखी के रूप में करती है विद्रोह का आह्वान
जीवन-शक्ति बन व्याप्त है अनन्त ब्रह्मांड में

आग पानी में है / कभी देखा हैं उस प्रचंड अग्नि-पुंज को
कलेजे में छिपी लौर का रहस्य समझता है समुद्र
मछलियाँ घूमती हैं सर्वत्र / अस्तित्व का संकट नहीं है किसी पर
संतुलन-सेतु पर ब्रह्मांड में चल रहा है महानृत्य
कोई सुनता है / कोई नहीं सुनता अनहद नाद

सामने के रास्तों में दहक रही आग से मत डरो

यहीं से आरम्भ होगा / अगली पीढ़ी का इतिहास
जन-जागरण का अद्वितीय अध्याय
समूह-शक्ति किसी आग से कम नहीं है
मेरे बन्धु

आओ / चले आओ / स्वागत करें उस दिन का
उन क्षणों का
आग किसी-भी क्षण फैल सकती है
गाँव में / शहर में / पर्वत-पठार के घेरे में

कविता

इधर से गुजरते वक्त वे लोग अक्सर शुरू कर देते हैं
कविता के संदर्भ में गम्भीर वहस
कहते हैं शब्दों की फिटिंग से कविता हो जाती है दमदार

कविता की जमीन तक पहुँचने के लिए कॉफी हाउस में
प्रतिदिन हाजिरी दर्ज कराना जरूरी है
बहस के दौर में तर्क करो / रुख देख गुस्से में हो लो
जहाँ शब्द कमजोर पड़ें / वहाँ दूसरे रास्ते की तलाश करो
किन्तु गम्भीरता का प्रदर्शन हर कीमत पर आवश्यक है

भाषा में आक्रामकता / युगानुरूप अभिनव प्रयोग है
शब्दों से पिटा आदमी पीछे मुड़ कर देखने की हिम्मत नहीं करता
समझो / कैसे दबाया जाता है खड़े आदमी को
जबकि हर माने में वह ताकतवर है

सूर या तुलसी या भारतेन्दु की तरह कविता की किताबें
तैयार कर / अब कोई कवि नहीं बन सकता
सड़क से राजभवन तक जब हम एक स्वर में चिल्लाते हैं
तब किसी कविता को पसन्द करने का अभ्यास करते हैं लोग
चलो / फ्रेंच रेस्तराँ की ओर चला जाय
वहाँ कई रंगों में तुम्हें समझाऊँगा कविता का अभिप्राय

मैंने कहा / आज नहीं फिर कभी / मुझे पूछना पड़ेगा कविता से
पृथ्वी और आकाश के बीच कहाँ है उसका अस्तित्व

जनता से पृथक / दिखावटी शब्द गढ़ना कविता नहीं है
वह विराट और लघु के बीच अनुभवों का व्याख्यान है
फिलहाल कविता फैशन नहीं / व्यक्ति की मूल चेतना है

वे सब मेरी बात सुन उस रोज चिल्ला पड़े थे
अरे ! अरे !! तुम कविता के इतने समीप पहुँच चुके हो
हम क्या जानें कि तुम भी बुन रहे हो एक इतिहास

उस दिन के बाद वे कभी नहीं दिखे / न मिले प्रभात में
इधर किसी ने बताया है / नशे में धुत एक समूह
जंगल में उड़ा रहा है पतंग / देख रहा है पंजों का खेल

उसे पकड़ लो भाइयो

अजनबी-सा चिल्लाता है कोई आदमी / भरे बाजार में
यह कौन है कंधे पर रखे सामान को उठाकर भाग रहा है
खुली सड़क पर / संशयहीन

पकड़ो / उसे पकड़ लो भाइयो
जो दिन में चलाता है रात का खेल
पर उस तरफ दौड़ने की हिम्मत कोई नहीं करता

सिर के बाल नोंच वह छटपटाता है देर तक
अंत में झुँझला कर बैठ जाता है मोची की दूकान पर
शायद उसे नहीं मालूम
बाजार में चल रहा है अंधेरे का कानून

बड़ेर से चिपके साँप चुलबुला कर बजा रहे हैं सीटी
धूप में उड़ती चिड़ियाँ थककर बैठ चुकी हैं डाल पर
संयोगात् तितलियों की तरफ किसी का ध्यान नहीं है

मजदूरों से क्यों छीनना चाहते हो
उनकी अमूल्य सम्पत्ति / कीमती हँसी
अशान्ति के समर्थन में दिखाते हो / मृत्यु-बोध के चित्र
खेल-तमाशे बीच जी रहा है एक भरा-पूरा देश

भीड़ से घिर चुके भिखारी पर पड़ रहे हैं घूँसे
कि चुरा लिया है गुड़ की भेल / चोटे की जलेबी

रोता है / काँखता है जोर से / पर कोई नहीं देता समर्थन वाक्य

अंततः सब एक स्वर में घोषित कर देते हैं
कि घटना सही है / दिन में घटी है। लोगों ने देखा है आँख से
चोर को समुचित दंड दिया जाय / कानून की तहत

तराजू के पल्ले में अंटी लगा
जो लोग घटा रहे हैं गरीबों का अनाज
उनके शब्दों से कोई नहीं भिड़ाता शब्द
जाने कौन कहाँ से दे रहा है अपराध को संरक्षण

तुम सब को दिखा दूँ

नहीं मानने / मत मानो / पर क्षण भर के लिए
आ जाओ मेरी तरफ
तुम सब को दिखा दूँ / खेल के बीच एक और खेल
तब खुद समझ लोगे
आदमी क्यों घिसटता है मेंढक की तरह
भरे समाज में / हजार आँख के सामने
सहारा मिलने के पूर्व टूट जाता है साँसों का सिलसिला

गाँव हों या कस्बे या महानगर का परिवेश
गरीब अनेक रूपों में करता है बेगार
कहाँ किस तरह रक्खोगे प्रार्थना के अर्थपूर्ण शब्द
प्रत्येक मंच पर हो रहा है पैशाचिक महामंत्र का जाप

उस रोज भैंस और बैलों की पीठ पर
जब किलँहटी के बच्चे पंख फड़फड़ा गीत गा रहे थे
तब थोड़े-से लोग नाराज मुद्रा में यह कहना शुरू कर चुके थे
पंख कटने पर मालूम होगा आवाज बदलने का राज

स्कूल की तलाश में टहल रहे बच्चे / क्या समझें
अनौपचारिक शिक्षा
अजीब है समय / अजीब है समय की परिभाषा
आकाश में टहल रहा है मन्दाग्निग्रस्त सूर्य
तप्त बालू में पानी की गुंजाइश नहीं है

जो प्यासे हैं
वही माँग रहे हैं जल की भिक्षा
ऐसे में कौन है दृढ़व्रती / जो सूर्य को करेगा जल-दान
बच्चे मौन रहें / अभी प्रकृति पर संकट है

खास किस्म के लोग जाने क्यों नाराज हैं आम आदमी से
जबकि देश को सांगीतिक माहौल देने में
सब का बराबर हाथ है

अधिकांश चूल्हों से रोटी गायब होने के बावजूद
कैसे कह दूँ कि सब ठीक-ठाक है
आग जले / जलती रहे
ऐसी आग से रोटी का कोई मतलब नहीं होता

अँधेरे का भय

किस तरह चलूँ / अगम अँधेरे के बीच
क्या पता / कहाँ है आग / कहाँ है पानी
सन्न मार / चुप-चाप / कहाँ बैठा है नाग

कौन बिछा कर भ्रम का जाल
बैठा है गुफानुमा झाल में
कैसे लार के स्वाद में उन्मत्त
तोड़ रहा है जीवन की मजबूत चट्टान

अँधेरे का अर्थशास्त्र भोग का पर्याय है
जो लुटता / वही घोषित होता है
प्रथम अपराधी

ऊर्जा-संचय के लिए जरूरी है प्रकाश का होना
तब और / जब हम चल रहे हों जंगल में
अमंगल महाकाल का मौन है

यथास्थिति से मुक्ति के निमित्त
जब हवा के विस्तार में पसारता हूँ हाथ
संतुलित करता हूँ कंधा / भुजाओं में शक्ति
असमर्थता पर हँस देते हैं तब
आकाश के अदृश्य गलियारे में सुस्ता रहे
असंख्य ज्योतिर्मय नक्षत्र

अँधेरा अकस्मात् क्यों फैलता है चक्रवात-सा
कुछ कबीलों / साधन-विहीन समूहों के आर-पार
जबकि अधिकांश लोग धनाधिक्य से तृप्त
मुलायम गद्दों पर लेते हैं चैन की साँस
देखते हैं बंद कमरों में नग्न अभिसार
कोई बात है कि अँधेरा भी सहम जाता है
गर्म घाटियों के बीच / उड़ रही सघन धूल से

कौन हैं वे जो अटारी पर बैठ
चला रहे हैं कटारी का खेल
खेल में पहले उठती हैं कसी-कसी आवाजें
फिर सुलग उठता है अस्तित्व का स्तूप
नागरिकनामें का सार्वजनिक इश्तहार
ऐसे में भसक जाता है विश्वास का बना-बनाया प्राचीर

भविष्य के संदर्भ में
इतिहास कैसे बन पायेगा यथार्थ का दर्पण

कौन है / डपट के साथ पूछना चाहता है सवाल
अपरिचित असाधारण महा जंगल में
रुको / मुझे देख लेने दो / विहँसते निष्कलुष नक्षत्र
प्रकाश स्वयं उत्तर बन प्रस्तुत होगा सामने
मैं अंधकार के खिलाफ तैयार कर रहा हूँ महाशक्ति

अस्तित्व का संकट

क्या मेरा हक नहीं बनता कि पूछ लूँ
क्यों उजड़ रहे हैं तमाम गाँव
क्यों डूब चुका है एक परिवार / अथाह जल में
चिबिल्ले हँस कर क्यों सुना रहे हैं
अपराध और अनर्थ की आतंक भरी कहानियाँ
जबकि उन्हें भी रहना है इसी देश की जमीन पर

लोग मुट्ठी भर अन्न के बूते घूम रहे हैं फटेहाल
बाजार में हर चीज का दाम छू रहा है आसमान
छुटभइयों ने खत्म कर दिया मानापमान का भेद

ऐसा क्यों नहीं होता कि जो हो
सब के लिए सामान हो / औसतन ठीक-ठाक हो
पलड़ा उलार या भारी होने का मतलब समझते हैं
वे भी / जो क्वार की धूप में देह जला चला रहे हैं हल

आम आदमी का संकट समझोगे तब / जब देखोगे
आँख के ठीक सामने अनर्थ का जमघट
कच्ची लकड़ियों पर दड़कता कुल्हाड़ा
पवित्र शब्दों के विरुद्ध बंदूक का प्रयोग
तब खून फफकेगा चूने के जल-सा
मृदंग और नगाड़े में खास फर्क न दिखेगा / उस समय

कुछ लोग कह सकते हैं / जलवायु ठीक है

भीड़ शान्ति की खोज में परेशान है
कहें / जैसा चाहें वैसा कहें लोग
मुँह पर लगाम कहाँ है बीच जंगल में

मुझे उदास हालत में देखकर
बगल में खड़ा आदमी धीमे से कहता है
जानते हो / मैं किस तरफ जाना चाहता हूँ

भेड़िये के आतंक से भयभीत मेमने-सा
मैं निहारने लगता हूँ उसका तमतमाया चेहरा
चेहरे पर छाये संख्यातीत अनुत्तरित प्रश्न

मुझे मौन देख वह विनम्र-भाव से कहने लगा
न जानो तो अच्छा रहेगा / मेरे भाई
तूफान में कोई किसी का साथ नहीं देता
कल जहाँ से चला / वहीं खड़ा हूँ आज भी / मैं

असहज यात्रा

अंधड़मुक्त आखिरी चोटी तक पहुँचने के पूर्व
अँधेरा फैलने लगा था आकाश में
ध्रुवसागरी धुंध बीच
स्पष्ट न हुआ
कहाँ हैं घने छतनार वृक्ष / अचीन्हें गाँव
रीछों की हरकत भरी अगम बस्तियाँ
कहाँ से आरम्भ होती हैं ऊँचे किस्म की श्रेणियाँ
गुफानुमा सँकरी घाटियों का अपरिचित देश
जहाँ हवा में होता रहता है प्रतिक्षण अखंड गान

छिर-छिर थिरकती श्याम पत्तियों बीच
अचानक बंद हो गया पक्षियों का समूह-गान
जैसे पहाड़
केवल वैराग्य का शब्दहीन महाकाव्य है
या किसी दार्शनिक के व्याख्यान का प्रथम प्रारूप

सन्नाटे की मुलायम उँगली पकड़
मौन साधना साध
जब पहुँचा बर्फीली चट्टान के पार
देखा / अँधेरे में निरन्तर बढ़ रहा है अँधेरा
भ्रमाधारित बनती बिगड़ती आकृतियाँ
साहस के खिलाफ / दे रही हैं पराजित होने का संदेश

गजब है आदमी का गतिशील इतिहास
जी लेता है वह आग-पानी में / समान भाव से
महाशक्तियाँ आँख बंद कर बिल्कुल खामोश हैं
जैसे मरण-ज्वाल का पूर्वार्पण है मनु-पुत्र

ओह ! यह कैसी आग है / चिर-चिर जल रहा है पहाड़
निर्झर-युक्त पर्वत इतना असमर्थ कैसे हो गया
कैसे सुरक्षित रहेंगे दीर्घतपा वृक्ष
परेशान जंगल सिर पर ढो रहा है मृत्यु का संदेश

भोर में देखा जब / पंचज्ञानी शिखर
बदला-सा नजर आया / भूगोल में राजनीति
सूर्याभा में स्नानरत थे हिम-खंड
वृक्ष भूल चुके थे / रात कहाँ लगी थी आग

अलंकृत देह / ज्योतिर्मय ललाट / सजी थी प्रकृति
अरण्य-वीथियों में झूम रही थी उत्फुल्ल वायु
एकान्त में अनन्य मौनालाप
कौन लघु / कौन दीर्घ / कौन है अस्तित्वहीन
समझ में नहीं आता महायात्रा का जैविक-दर्शन

हवाएँ दे रही हैं संदेश

किसने कहा था

मुझे नहीं मालूम / मैं कैसे जीवित हूँ / ले रहा हूँ साँस
यह भी नहीं मालूम / कितनी जमीन का मालिक हूँ
रोज पत्थर तोड़ पानी पीता
रोटी की व्यवस्था में दौड़ता हूँ दिन-रात
प्यार से कोई नहीं देता सहानुभूति के शब्द
कि आओ मेरे बन्धु / उदास क्यों हो
देश तुम्हारे साथ है

आदमी होने का सवाल सब से पहले किसने उठाया
किसने कहा था / चेहरे पर जमी धूल साफ कर लो!
सोचता हूँ पर याद नहीं आता
अर्थहीन स्थिति में पाँव सहलाते गुजर रहा है समय

हाँ ! इतना जरूर है / तब मैं पढ़ने लगा था
नागरिकता सम्बन्धी महत्वपूर्ण किताबें
पर कहीं न मिला आदमी को आदमी बनाने का तर्क
समतावाद के तमाम सिद्धान्त या तो हवा में उड़ गये हैं
या खो चुके हैं किताबी पंक्तियों में / असहाय

दुनिया के असंख्य लोग विचारों के बने-बनाये साँचे में
कैद हैं / कैसे मुक्त किया जाय विशाल समुदाय!
सब-के-सब अंधेरे को रोशनी समझना शुरू कर दिये हैं

कुछ भी कहो / सुन लेते हैं चुपचाप / जैसे मौन वायु-तरंग
पूछो / पूछते रहो / जवाब देने को तैयार नहीं हैं
जैसे हर चीज का उत्तर देना
परेशान आदमी के लिए आवश्यक नहीं है

जीवन-यात्रा में तमाम घटनाओं के बीच ताल-मेल बैठा
अब तक इतना ही समझ पाया हूँ कि आदमी को
हर वक्त देखना चाहिए / समाज का ऐतिहासिक परिदृश्य
बहुमत के खिलाफ जो खड़ा करेगा समूह
वही पराजित होगा / खुले मैदान में

सब चलें / चलते रहें एक साथ
विश्वास का रिश्ता कायम होने पर
हवा के बटवारे की जरूरत नहीं पड़ती
अपराध के विरोध में आकाश करता है महाघोष
समुद्र है जो बताता है पर्वत को
ऊँचाई और अतल गहराई का व्यापक अर्थ

समय

कितना घातक समय होगा वह / जब पलक खुलने
और मुंदने पर नियंत्रण होगा वर्दीधारियों का
तमाम कंधों पर दिखेंगी बन्दूकें / गोलियों से भरा बैग
सुबह-शाम परेड ग्राउंड पर बजेगा जुझारू बैंड
इतिहास अँधेरे में देखेगा / कट रहे पेड़ों का अपमान

आग के भभके से छौंछियाये लोग चौंकेंगे
पूछेंगे चाँद-सूरज से / ग्रह-नक्षत्रों से
अग्नि-वृष्टि होने में अभी कितना समय शेष है

हवा में बूट उछाल गरजेगा अग्रगामी सूबेदार
पूछेगा / बार-बार कहेगा
वे लोग कहाँ हैं जो कुछ देर पहले तक
खुली सड़क को रौंद कर सुना रहे थे / जन-प्रेरक
आजादी के पारम्परिक गीत
परिवर्तित स्वर में कविता सुना / खामोश हो जाना
समय को चुनौती देना है / असह्य हैं घातक शब्द

मुक्ति संघर्ष की भयानकता से वे परिचित नहीं हैं क्या
हम उन्हें बतायेंगे / बारूद तैयार करने की स्पीड
एकाएक क्यों तेज हो गयी है देश में
क्यों उड़ती धूल को दबाने के लिए शुरू हो चुकी है बारिश

देश में सब रहेंगे / पर वे नहीं रह पायेंगे
जो देख रहे हैं मुरेठा बुन सिंहासन बनाने का सपना
सब तरफ जब चलेंगी बख्तरबंद गाड़ियाँ
झोंपड़े उजड़ेंगे / बहेगी खून की धार
कमजोर औरतें अदहन के चावल की तरह
बुद-बुद दहकेंगी / बंद कमरों में
पुरुष सिर झुकाये देखेंगे आश्चर्यपूर्ण दृश्य
सिवान में नष्ट हो रही फसलें / नारियल के पेड़
संत्रास की हालत में यही सब होता है
समस्याच्छादित किसी आन्दोलित देश में

आश्चर्य है / बीसवीं सदी के आखिरी दौर में
आदमी बोल रहा है जानवर की भाषा
कौन कहे कि हर उच्चारण न शब्द है / न भाषा

ऐसे में यह कैसे सम्भव है
कि आदमी एक स्वर में स्वीकार ले
कि सब ठीक-ठाक है
गमछा हाथ में नहीं कंधे पर रखा है
चल रहा हूँ नाक की सीध में / जहाँ तक जाना है

तर्क जरूरी है बंधु / आदर्श जनतंत्र में

मेरे देशवासियो–१

आओ / चले आओ / मेरे देशवासियो
गहन अँधेरे के पार / अंधकार के संकेत पर उठ सकता है
एक और तूफान

दिमागी तनाव का अर्थ मैं बेहतर पैमाने पर समझता हूँ
जो घनी बस्तियों / बेचैन गाँवों में जनमा है
उसे मालूम है
आँधी-तूफान में कैसे जिया जाता है सार्थक जीवन

मैं जंगल से दूर
तुम्हें उस जमीन तक ले चलना चाहता हूँ
जहाँ कुछ लोग सिर झुकाये लिख रहे हैं
संविधान की नयी किताब
उस किताब पर हर गरीब का समान अधिकार होगा

पुराने कानून से अब नहीं चलता देश
लोग / बर्फ कहने पर / जाने क्यों समझ लेते हैं आग
शब्दकोश कहाँ तक समझायेगा / शब्दों का सही अर्थ

मुझे पता है
आदमी उदास मन क्यों खड़ा है पेड़ के नीचे
शब्दों के छलावे में उन्हें नहीं आती नींद

चाहे दिन हो या रात
समय बीत रहा है संशय और व्याकुलता में

कुछ दिन और बिता लो उपेक्षित अनादरपूर्ण जीवन
आम और महुए / कटीले पेड़ के नीचे
सार्वजनिक मुद्दे / जनता की अदालत में पेश हैं
जनता की भीड़ किसी को क्षमा नहीं करेगी तब
जब निश्चित होगा निर्णय का दिन

नये संविधान में वह सब नहीं मिलेगा
जिसे तुम इस वक्त देख रहे हो / अपने चारों ओर
आदमी हाँफ रहा है थके बैल-सा असहाय

तुम मुझसे क्या चाहते हो / रोटी कपड़ा या मकान
ये चीजें इस वक्त जंगल के पार हैं शिकारियों के पास
और मैं उन रास्तों से होकर आगे नहीं बढ़ना चाहता
क्योंकि वहाँ समाज के खिलाफ षडयंत्र की योजना
तैयार हो रही है / बर्फ पर जैसे आग

सोचो / मुझसे डर कर कहाँ जाना चाहोगे
आदमी / माँ बहन भाई से नहीं डरता
नहीं डरता इतिहास में उठते बवंडर / तूफान से
मैं तुम्हें दूँगा प्रकाश / आस्थावान शब्द
जो कभी धोखा नहीं देते
शब्द / महाशक्ति में विश्वास का अन्तिम प्रतीक है

मेरे देशवासियो—२

शिकारियों के जत्थे को चुप-चाप निकल जाने दो
जंगल के इलाके में
तस्करी दौर में जुटा रहे हैं सोने की सिल्लियाँ
नीलामी पर चढ़ चुकी सभ्यता के गुर्गों के अनुसार
एक सिल्ली का दाम शब्दों में केवल दो करोड़ होता है

इनसे मत पूछो तीर-कमान उठाने का कारण
ये सार्थक भाषा के बेहद खिलाफ हैं
मेरे देशवासियो

खून के जमे थक्कों को देख / वे हँसकर पूछते हैं
माँस की बोटियाँ हैं या मुलायम हड्डियाँ
रंग बदलने पर चीजों को समझ पाना मुश्किल होता है

तुम चाहते हो / ऐसे लोगों से वार्ता की शुरुआत की जाय
पर यह कैसे सम्भव है
जब कि वे भाषा और संवेदना से बहुत दूर हैं
मेरे देशवासियो

बोध के स्तर पर उनके कानों में हमेशा गूँजते हैं
छल-छद्म या कि प्रपंच और हत्या जैसे शब्द

जितना चाहो / जब-तक चाहो
इस बारे में उनसे कर सकते हो बहस
उद्दंड कुत्ते / उनके संरक्षण में घूम रहे हैं निश्चिन्त

भाषा हीनता की हालत में
ये लोग अक्सर उन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं
जिनका भूखे-नंगे आदमी से खास मतलब नहीं होता
बज्जात के साथ चलना कितना खतरनाक है
इसे तुम अच्छी तरह जानते हो / मेरे देशवासियो

इन्हें मारने दो हिरन / सांभर के नन्हें मासूम बच्चे
नवोदित समाज का अखंड जागरण-गीत सुन
वे स्वयं चिल्ला पड़ेंगे / मेरे देशवासियो

मेरे देशवासियो—३

मैं किस तरह खुली सड़क पर चलूँ
कैसे बात करूँ / माँ बाप या औरत से
चारों तरफ खड़ी हैं बख्तरबंद गाड़ियाँ / सेना के जवान
वे कहते हैं / कायदे से चलो / ठीक से बैठो
फिलहाल जनता को भड़काने का दंड बाद में मिलेगा

उन्हें कौन समझाये कि सोते आदमी को जगाना
देश-द्रोह नहीं है
प्यासे आदमी तक पानी पहुँचा देना जरूरी है
मेरे देशवासियो

तलाशी के बाद खुद के मकान में प्रवेश करना
समझ में नहीं आता / कहाँ बैठा है तानाशाह
उसके चेहरे पर कैसे उग आये हैं प्रेत जैसे बाल

बाजार में कहीं नहीं दिखता अन्न
आदमी खुलेआम जिबह होता है चौराहे पर / मासूम बकरे-सा
सुरक्षा से जुड़े असंख्य कानून सूखे फूल / पुंछे ज्यों पड़े हैं
अपमानित दरवाजों पर

जिनसे न्याय माँगता हूँ मेरे देशवासियो
वही बंदूक पटक / तेजी में उचक
चुप / बिल्कुल चुप रहने का संकेत देते हैं
झूठ-मूठ में कैसे कह दूँ
कि देश का रक्त चाप ठीक होने के करीब है

आदमी और बंदूक / लाश और कफन के खेल में
वही जुटे हैं कमर-कस
जो आदमी की जुबान बंद कर
कुर्सियों पर अड़े रहने की साजिश में परेशान है

पर उन्हें नहीं मालूम कि बकरे भी चिकवे की खिलाफत में
मजबूती से ऐंठ कर उठाते हैं गर्दन
भले-ही लड़ाई के अन्त में / वे हार जाते हैं कटकर

हम बढ़ेंगे / बढ़ते रहेंगे / गोली की तरह दनादन
कोई साथ चले / न चले
हौसला हमेशा बुलंद रहेगा / मेरे देशवासियो

असफल महामंत्री

वे सब धर्म और नीति शब्द को लेकर
जब गम्भीर बहस में जुटे थे
मैं मरणासन्न चींटे का आत्मसंघर्ष
और जीते रहने की उत्कट अभिलाषा का
बोध कर रहा था
चींटा मौत को तावड़तोड़ दे रहा था जवाब

धर्माचार्य / हत्या और रोटी की सामूहिक समस्या पर
क्यों नहीं करते / युगानुकूल विचार
निरन्तर भटक रहे आदमी के पक्ष में संकल्पपूर्वक
प्रचारित करना चाहिए स्पष्ट बयान

सामाजिक चिंतन से अलग किसी दर्शन का
कोई मूल्य नहीं होता
हम क्या करेंगे सुनकर / शून्य आकाश का परिचय

शब्दों के पारखी वेद-पुराण के नाम
चौरी-चौरा आसन जमा दे रहे हैं उपदेश
कि प्रकाश के रूप में सर्वत्र विद्यमान है ईश्वर
वही सबको देता है प्रगति का समान अवसर

सामाजिक अधिकार / समन्वित कर्त्तव्य
लोग परेशान न हो
केवल उन्माद रहित आस्था की जरूरत है

असफल महामंत्र के प्रभाव में दौड़ रहे हैं भिखारी
कातर - ध्वनि में माँगते हैं भिक्षा
किन्तु ऊँचे दरवाजों से पाते हैं अपमान और उपेक्षा

देखते-देखते / आँख के सामने बच्चे हो जाते हैं हलाल
पर ईश्वर कहीं नहीं दिखता / धूप या हवा में
आदमी की भाषा का वजन समाप्त है दुनिया में

काफी देर बाद मैंने पूछ दिया / क्या हुआ
कहाँ समाप्त होती है अगम की यात्रा
संतोष नहीं
अनुपलब्ध है सत्य
आत्म-बोध के शब्द दे-दो मुझे

तब वे बोले / सोच रहा हूँ / फिर कभी मिलना
सही मौके पर दूँगा जवाब
जैसे खाली हो चुके सुपेली में रखे
जौ / अक्षत-कण
रिक्तता-बोध अन्यथा प्रसंग नहीं है समाज में

कविवर

कविवर ! जंगल के भीतरी इलाके में कैसे आ गये
हवा का स्वभाव बदल चुका है सब तरफ
गेहूँ के पौदे में दिख रही है मटर की फली
कुछ-भी हो / जलवायु परखना तुम्हारा काम नहीं है

जंगल में किसी को नहीं है सार्थक बयान देने का अधिकार
लिखो / अकेले में बैठ कर लिखते रहो जीवन भर
लिखने से किसी को घबराहट नहीं होती
बोलने पर चौंक जाते हैं / धनी लोग

उस रोज / चौराहे पर डफली बजा / तुम सुना गये कविता
जादू है कि जनता दौड़ रही है शब्दों के साथ
भीड़ को आक्रामक बनाना कानूनी जुर्म है समाज में

प्रेम-गीत गाकर सुला दो / एक तरफ से / सब को
तब खुश होंगे हिफाजत में बैठे लोग
समयोपरान्त तुम्हें मिल सकता है / कीमती पुरस्कार

यह सच है / कवि देता है युग-सत्य / समय का स्वर
किन्तु इस तर्क को मानता है कौन
जनता से अलग जब कभी मिलोगे अकेले में

लोग हाथ पर रख देंगे / कागज का नन्हा-सा टुकड़ा
उसमें अंकित होंगे / असंख्य आरोप
झेलो / क्योंकि प्रत्येक नागरिक झेल रहा है संघर्ष

बंदूक की नोंक पर साँस ले रहे जंगल को
कविता की जरूरत नहीं है
गजब है कविता / जो सोते आदमी को जगा देती है

कविवर ! डरो नहीं / तुम डरे कि डर जायँगे
मजदूर-किसान / खेतों में काम करते हलवाहे
होनहार बच्चे / नौजवान

कविता में मजबूत शब्दों की फिटिंग
यथावत जारी रहे / बजें हल से हल के फाल
आखिर में कविता ही देगी भटकते समुदाय को प्रकाश
प्रकाश का अनन्त सत्य
सत्य किसी को पथ पर भटकने की अनुमति नहीं देता

अदृश्य नदी

जंगल में कब-तक / कहाँ-तक बहेगी अदृश्य नदी
जुल्म ढोने के खिलाफ / सीना तान
हर दरवाजे पर खड़ी है इक्कीसवीं सदी
कोई माँ कैसे चाहेगी
लोग कर दें / उसके इकलौते बेटे की हत्या

जिधर देखो / उधर सुलग रही है। राख में छिपी आग
बुझाने पर बुझने का नाम नहीं लेती
उल्टे / प्रचंड वेग में / दूर-दूर तक फैल जाती है आग
अधिकांश जगहों पर सब देख रहे हैं मौत का तमाशा
आदमी है कि नहीं डरता / आखिरी साँस तक

मूर्च्छित शताब्दी उतान पड़ी है / बीमार औरत की तरह
बच्चे तानकर जमा रहे हैं गाल पर तमाचा
मजबूरी में सब मान लेते हैं इसे / नये जमाने का खेल

टाँग कटे आदमी की समझ में नहीं आता
अगली शताब्दी किस तरफ से शुरू करेगी महायात्रा
स्वागत में कौन चढ़ायेगा फूल / सुनायेगा गीत
भाषा में तस्करी की सम्भावना बढ़ गयी है अनायास
सीधे शब्द भी उलट कर दे रहे हैं / नकारात्मक जवाब

ये कौन हैं / जो अपने-ही झोंपड़ों में लगा दिये हैं आग
रोक सको तो रोक दो इन्हें / आज की रात
यह रात बहुत डरावनी है मेरे भाई
तड़कते बाँस / औरतों की आवाज सुन
पूँछ उठा दौड़ रहे हैं जानवर / भौंकते हैं कुत्ते

जंगल में बैठे / शातिर किस्म के बदमाश
बटोर रहे हैं फल / चंदन की लकड़ी / कीमती वनस्पतियाँ
धमका रहे हैं इतिहास-पुरुष को / बार-बार / लगातार
ऐसे में कैसे माना जाय कि अगली शताब्दी के आने पर
ज्योतिष सार्थक होगा / होंगे कुछ अच्छे काम

आम्र-वृक्ष के नीचे कौन बजा रहा है बाँसुरी
स्वर-प्रभाव से काँप रही है काया
कहो कि स्थगित कर दें सांगीतिक धर्म-प्रचार
कुछ सोचने और कर दिखाने का मौसम
संकेतों के सहारे आ गया है ठीक सामने
समझो और थाम लो
आसमान में चमकती-चुलबुलाती प्रचंड बिजलियाँ

रामभरोसे

कुछ लोग रामभरोसे के नाम से घबड़ाते हैं
जबकि बात व्यवहार में वह सही आदमी है
हँसता है / मिलता है सबसे
पूछता है घर-परिवार खेत-खलिहान का हाल

रामभरोसे का झोंपड़ा मेरे घर के ठीक सामने है
बरगद के बगल बैठ दिन भर छाँटता है लकड़ियाँ
या दनादन घन चला दुरुस्त करता है लोहे का स्वभाव
मुँह सोझ होने पर
तपते लोहे को डाल देता है पानी में

लकड़ी और लोहे के मामले में उसे महारत हासिल है
दौगरा पड़ने पर सब पूछते हैं / सुबह-शाम
हेंगे की घुंडी टूटी है / कब ठीक होगा हल
गर्दन उठा तब कहता है रामभरोसे
मेरे जीते किस बात की चिंता है रजऊ
लो अभी दिया / जगाओ पृथ्वी का सौभाग्य

काम के वक्त वह किसी तरफ ध्यान नहीं देता
केवल चलाता है बसूला खट्टर-खट्ट
लकड़ी चमाचम चमकती है जैसे शीशा

फिर रंदा फेरने की जरूरत नहीं पड़ती
जब चाहो परख सकते हो उसके हाथ का जादू

भरोसे की मजबूरियों तक किसी का दिमाग नहीं पहुँचता
बात-बतकही के बाद सब लौट जाते हैं काम पर
दो औरत / तीन बेटे / सात बेटियों का पेट भरने में
वह परेशान रहता है दिन-रात

एक रोज यों-ही / जाने क्यों पूछ दिया मैंने
देह और धौंकनी या आग और लोहे का फर्क
किस हद तक समझ पाये हो तुम
क्या लोहे की मौलिक भाषा का मतलब समझा सकते हो

भरोसे ठहाका मार हँसने लगा था / थोड़ी देर में बोला
लोहा आसानी से नहीं / कल्ले के जोर से कटता है
धन और हथौड़े के बीच देखो
लोहा मछली की तरह उछल कर खामोश पड़ जाता है

वैसे इस वक्त मैं कुछ और बताने के मूड में हूँ
पर क्या करूँ / मेरे पास न शब्द हैं / न भाषा
तुम्हीं बता दो मुझे / कैसे ठीक किया जाय जनतंत्र का धुरा
जर्जर बैलगाड़ी की हैसियत में कितने दिन चलेगा देश

मेरे देश के मालिक

जो भूखा है
सहलाता है दिन भर पेट
वही चुराता है रोटी
नमक की डली
रोटी की चोरी कोई जुर्म नहीं है
मेरे देश के मालिक

ऐसा क्यों होता है

जब कोई आदमी
सही आवाज देता है
खुले दरवाजे
फटाफट बंद हो जाते हैं

पूछो / पूछो

ऐसा क्यों होता है अक्सर
कोई जवाब देने को तैयार नहीं है

एक निर्भय चेहरा

लोहार ने हँसकर कहा भाई
जनतंत्र में जीने-खाने
मौज उड़ाने का हक / केवल तुम्हें प्राप्त है

सोनार की समझ में न आया
सरपट्टे में क्या-क्या कह गया लोहार
वह चश्मे के भीतर से ताकता रहा
एक निर्भय चेहरा

बंदूक है अब

कमरे में पहुँचते-ही मैंने पूछ दिया
कहाँ है कलम
लिखना बन्द कर चुके हो क्या
आँख मुलमुला कर उसने जवाब दिया
बंदूक है अब
कलम फेल है तमाम मुद्दों पर

कौन है

सुबह से शाम तक तुम्हें अक्सर देखा है जंगल के समीप
उन खेतों में
जहाँ लहलहा रहे हैं ज्वार-बाजरे के खेत
केले और पपीते के खूबसूरत पेड़ / सूरजमुखी के फूल
ककड़ी के खेतों में बैठे बच्चे पीट रहे हैं कनस्तर

दानों भरी बाजरे की बालों को सहलाते-सँवारते
तुम निकल जाते हो एक साँस में बहुत दूर तक
फिर मंद स्वर में उड़ाते हो भुर्रइयों के झुंड
रंगीन चिड़ियाँ हवा में नाच-नाच कर सुनाती हैं गीत
उन्हें इस बात का भय नहीं है
कि साध कर उन पर चला दोगे तुम ढेलवाँस
इसी बहाने तुम उन्हें देते हो सृष्टि का अनन्त प्यार

धूप खिलने पर किलहटी के बच्चे झूमते हैं
तिल के छतनार पेड़ों पर
चर्खियाँ चहकती हैं सूखे मुलायम पत्तों के बीच
गुलबिया के आने पर तत्काल शुरू होता है अखंड कीर्तन

अकस्मात / ऐसे में जब कोई छिप कर चला देता है गुलेल
अकुलाहट में तुम चिल्ला पड़ते हो

कौन है रे
मासूम चिड़ियों की हत्या से
बाग-बगीचे / हरी लताएँ सब का रंग हो सकता है पीला
वसन्त के महोत्सव में अब न आयेंगी चिड़ियाँ
कौन गायेगा प्रकृत गीत / कैसे समृद्ध होगी फसल

चिड़ियों के पक्ष में प्रभावी घोषणा सुन जंगल होता है
नाराज / देता है केवल एक वाक्य
ऊपर उठना / उठते जाना / मुझे स्वीकार नहीं है
मैं तोड़ देता हूँ हर ऊँचे पेड़ की डाल

कल भोर के धुँधलके में जंगली भैंसे रौंदेंगे
बाजरे के खेत / तब क्या करोगे तुम
क्या मेरी सत्ता तुम्हें स्वीकार नहीं है

वह आदमी / जो बुढ़ापे के बोझ से
हो चुका है जर्जर / कहता है केवल एक वाक्य
तुम्हें लोक-कल्याण की परिभाषा नहीं मालूम
इसीलिए नहीं समझ सकते आत्मा का व्यवहार
चिड़ियाँ ब्रह्मांड का अलंकार हैं

जमीन पर चलो

हे भाई / आकाश में नहीं / जमीन पर चलो
जिस तरह आदमी चलता है / उस तरह चलो
मत कहो / काली रात में तारे सुनाते हैं अनन्त का संदेश
जादुई दौर से होकर चलने में खतरे की सम्भावना ज्यादा है

तुम उन लोगों की तरफ सम्भवतः नहीं देख पाते
जो विक्षिप्तावस्था में दौड़ रहे हैं बालू और दलदल के बीच
खौफनाक चेहरे गुमसुम दिखा रहे हैं हिकमत / खेल
शब्द अपरिचित होने से आदमी फँस रहा है खुलेआम
काठ की चीर पर नटखट बंदर-सा
सोचो / कितनी गोपनीयता से चल रहा है मायामय प्रपंच

दिन में खड़ी फसल को जबरन नीलाम करना
दोपहर में गली-गली / समृद्ध बनिये की तेज आवाज
लमहों में उड़ जाता है घर-गाँव का अनाज

पहले मुलायम भाषा
फिर भौंह के इशारे पर गुर्राता है सिड़ी सेठ
मीठे शब्दों में सुना देता है संक्षिप्त द्रव्योपाख्यान
मनमानी रेट पर खरीद लेता है बोरे-पर-बोरा / अनाज
जो चाहेगा सेठों का सेठ / वही होता रहेगा देश में

दूर / एकान्त में खड़ी माँ को बता दो / मेरे भाई
जाने क्यों सब भूल रहे हैं मातृभाषा
वही है / जो दिल-दिमाग के बल दे सकती है
स्फोट का नया सिद्धान्त
तब गुमराह होने से बच सकता है
कई अक्षांश देशान्तरों के बीच फैला समाज

मेरा छोटा-सा गाँव / इसी देश का एक अंग है
बेचैनी की हालत में वह कितनी बार रोया / सोया
याकि चिल्लाया आधीरात में
कौन जान पाया
तेजाबी मारकता के साथ हवा चल रही है बे-हिसाब

सब बुझाने में जुटे हैं आग

गाँव / हर दरवाजे / चप्पे-चप्पे से उठ रही आवाज
पूछने पर लोग बताते हैं / आया है तूफान / कहीं बाढ़
असलियत से परिचित नहीं हो पाते लोग
इतना जरूर है कि बाजार में बढ़ रही है भीड़
अनाज कम / खरीदने वाले ज्यादा हैं
क्रेता देखते हैं विक्रेताओं की आँख

चलती ट्रेन रोक / सब बुझाने में जुटे हैं आग
आग बुझती है पर जलने लगते हैं गाँव
बड़े पैमाने पर सुलग रही आग को दबा पाना
आसान नहीं है

आदमी तीर बिंधे हिरन-सा दौड़ता है बाजार में
गली-गली शहर में
समझ में नहीं आता कितनी नाजुक घड़ी है
किन परिस्थितियों में घट रही हैं घटनाएँ

अकेला आदमी जब कहीं रुककर
कनखियों के सहारे देता है मार्मिक संकेत
नल्ले और कल्ले की हड्डियाँ तड़ातड़ टूट / हो जाती हैं बे-काम
जाने कहाँ से कूद लेते हैं आक्रामक / समझ में नहीं आता

आतंक से पीड़ित परिवार जब पलायन करता है अप्रत्याशित
बजने लगते हैं धमाधम नगाड़े
शान्ति-प्रदर्शन के निमित्त चल रहा है जादू का खेल

आदमी से अधिक दर्दनाक है जानवरों का आत्मसंघर्ष
ऊष्माकुल गायें उदास मन खड़ी हैं / बम्बों के पास
केवल पानी की तलाश में बीत रहा है समय

न मिलेगी रोटी / न मिलेगा पानी / कैसे चलेगी साँस
वर्तमान हो या भविष्य / कौन किसी पर करेगा विश्वास
निराश पीढ़ी आँख मींच देखती है अनन्त की ओर
आकाश है जो डूबते जन को दे सकता है
आत्मविश्वास का अखंड दर्शन

होता है सब-कुछ

हवा में उठते उन्माद पूर्ण शब्दों को सुन
सृजन के स्तर पर / जब शुरू करता हूँ सँवारना
दम्भरहित / जनाधारित उपयोगी शब्द
कि भाषा में ताल-मेल अनिवार्य है उस वक्त
जब व्यक्ति-राष्ट्र के समन्वयार्थ छिड़ चुकी हो बहस

ध्यानाकर्षण के गम्भीर प्रश्न सुन
प्रतिक्रियावादी आरम्भ कर देते हैं
नाक पर बैठी मक्खियों को उड़ाना
या खुजलाते हैं गंजे सिर की झुर्रियाँ / निरर्थक

वे हर हालत में चाहते हैं कि चुटकी बजा
आम आदमी को कमजोर किया जाय
उनसे क्या मतलब
बज रहा है बाजा या हो रहा है खेल

गर्दन उठा जब कुछ लोग देते हैं पक्ष में
हवा को गति / समर्थन का आधार
कि आप हो चुके हैं यथार्थ के खिलाफ
सभा-मण्डप छोड़कर चलें / धूल-रेत में / देख लें
सूखी पत्तियों के बीच छिपे हैं मुरझाये फूल

रात में विरहा टेरने का मतलब यह नहीं होता
कि नदी लबालब है / खुशहाल हैं नन्हें झोंपड़े

संवेदनहीनता की हालत में क्या हम बन जायँ
तिलचट पत्थर / काल-मुक्त गूलर की जड़
रोटी अनिवार्यता है साँस के लिए
चाहे मोची हो या मजदूर या सभाध्यक्ष
सोचें / सीने पर हाथ रख / बयान जारी करें बाद में

अगली पंक्ति में बैठा आदमी हँसता है पेट फुला
ठहाका मार आँख नचाता है / नाचता-सा
फिर भाषा को चालाकी में लपेट विनम्रतावश कहता है
समुद्र ठीक है / नदियाँ बह रही हैं द्रुत गति से
नावों का उलटना / आदमी का डूबना / केवल खबरें हैं

अनुभवी जन तत्काल वार्ता करें उन मछुवारों से
जो बूझते हैं जल का रहस्यवाद
तब समझोगे / क्षण-मात्र में कैसे बदल जाता है
सजे-सजाये देश का / बना-बनाया इतिहास

अँधेरे में अँधेरा

मैं उस समूह को उल्लासपूर्वक सम्मान देने
पराजित सिपाही ज्यों सिर झुका
प्रणामी मुद्रा प्रदर्शित करने के खिलाफ हूँ
जो उद्दण्ड और चालाक / प्रशिक्षित घोड़ों पर बैठ
सिवान में चराने आये हैं भेड़ / चपल बकरियाँ
विदेशी नश्ल के विचित्र जानवर

कैसे समझ लिया है दूर बसे गाँव
वहाँ के बासिन्दों ने
कि पृथ्वी केवल उन लोगों का जमघट है
जो डाल चुके हैं हथियार / जीवन-समर में
गिरोहबन्द जो चाहें कर सकते हैं
जैसे भेड़ों के बीच भेड़िया

भयोत्पादन के वीभत्स परिणामों बीच
आक्रामक नहीं पा सकता / प्रेम या कि सम्मान
अपमान से जन्म होता है प्रतिक्रियावाद का

समाज स्थिर नहीं / गतिशील है / सम्पूर्णता में
चलें लोग / जहाँ तक जाना है उन्हें / निश्चिन्त
काल्पनिक भाववाद और यथार्थ के
अलंध्य सेतु पर

प्रश्नवाची चिह्नों के बहाने
लगातार सोच का संकट पैदा करना
न किसी का अधिकार है / न धर्म
विश्वास पर चल रहा है समाज का महारथ

उन्माद-अहंकार / कैसे-कैसे घायल करता है मन
कैसे उत्पन्न करता है बवंडर समाज में
समझता है वही / जो उठाता है आग का गोला
मजबूत कंधों पर

अँधेरे में चलते वक्त वे फलों के साथ
काट कर बाँध लेते हैं गेहूँ और जौ के पूँजे
बगीचों में उग आयी हरी घास
जैसे पृथ्वी पर उन्हीं का अधिकार हो
खेलें / चाहे लगा दें आग / कृपा पर निर्भर है

उनका इस बात से खास मतलब नहीं
कि साल भर कैसे चलेगा किसानों का खर्च
या ठण्ड से बचने के लिए कहाँ से होगा
कपड़े का इंतजाम
दवा के अभाव में खत्म हो सकते हैं सार्थक नागरिक
जिन्हें अपने से अधिक उनसे लगाव है
जो देश-हित में जुटे हैं / लेकर भविष्य का पुरुषार्थ

कृषि-धर्म के अतिरिक्त और क्या शेष है गाँव में
श्रम के बूते राष्ट्रीय सम्पदा बढ़ाने के बावजूद
अर्थ-व्यवस्था में दूर तक नहीं दिखता उनका स्थान
जैसे तिनके का धर्म है केवल उड़ना
खो जाना हवा में
जमीन पर उतरते ही पड़ सकता है चालबाज आँख में

पूछो / उन्हें मैं ऊँचा आसन क्यों दूँ
जो प्रपंचपूर्ण छद्म वेशधारी / अपरबलों के बूते
अधिकार जताना चाहते हैं पुश्तैनी जमीन पर
कहते हैं जिसकी लाठी उसकी भैंस
कागज का नहीं / ताकत की वाहवाही है

जो बनाना चाहते हैं पृथक अभयारण्य
वे विधि-विधान / स्वागत-सम्मान को मानते हैं
दरिद्र का प्रार्थना-गीत
कहाँ जाय असमर्थ / सहारा कौन देता है अंधड़ में

जहाँ है व्यवस्था का दिव्य सज्जित मण्डप
वहीं ठीक बगल मूँगफली छील
लोग बिता रहे हैं समय
होना कुछ नहीं / अनहोनी का बिछा है महाजाल
हवा में सन्नाटा कायम कर / एक तीर बेधता है
असंख्य देह

वह कौन / अँधेरे में अँधेरा उत्पन्न कर
गुम हो जाता है छतों के सहारे
मलिन छाया-सा / अप्रत्यासित
सार्वजनिक रूप में प्रसंगहीन बन पाना
कठिन है / उनके लिए
जो सामाजिकता के विरुद्ध उठा चुके हैं
तेज हथियार

सप्ताहों-पखवारों तक जब चलता है
मुंड-वादन का व्यवहार
हवा काँप कर थाम लेती है पेड़ की फुनगी
जंगल के झुरमुटों-बीच बसे छोटे-छोटे गाँव
मैदान से कट जाता है / प्रकृत सम्बन्ध

यद्यपि आभिजात्य वर्ग नहीं समझता संघर्ष का अर्थ
फिर-भी पलक भाँज हँसते हैं दोपहर तक
उन्हें क्या पता / चिड़ियाँ क्यों उड़ रही हैं आकाश में

जब दोपहर में फैलता है धुआँ किसी देश में
पाठेतर मंत्र पढ़े जाते हैं धड़ाधड़
धुंध में दिखते हैं अजीब किस्म के दृश्य
खरगोश के साथ भेड़िया चलता है नदी की ओर
घटना का स्थान ले लिया है दुर्घटना ने

हैरत की बात तब आती है सामने
जब नीति को अनीति से मिला देते हैं लोग
जैसे गुंथे आटे में रुई का रेशा

बताये कोई / समझा दे कोई / मुझे
क्रूर घुड़सवारों से कैसे किया जाय समझौता
वे अपरिचित हैं भाषा-संस्कार / व्यवहार से
मैं नहीं चाहता / इतिहास मुझे घोषित कर दे / दगाबाज
तूफान उठने पर कौन रोक सकता है
धूल का उड़ना

सुबह जो सपना आता है

बचपन में सुना था / किसी ने कहा था
सुबह जो सपना आता है
वह अक्सर सच होता है
लोग तभी-तो देखना चाहते हैं
भोर में एक अच्छा-सा सपना

स्वप्न हवा में उठते
धीरे-धीरे हिलते
फिर पुतलियों की छाया में हो जाते हैं अदृश्य
वैसे / सपना तकलीफ देने की नीति नहीं अपनाता

सुखद सपनों के होने
दिल-दिमाग पर छाने का कुछ अर्थ होता है
अर्थ व्याख्यायित करना उतना-ही कठिन है
जितना क्रुद्ध समुद्र की लहरें गिनना
मिलता कुछ नहीं / खो जाते हैं चिंतन के तमाम पक्ष

जहाँ तक याद है
कानों में जब पड़ी थी / पहली बार आवाज
माघ का महीना था / शीत बोझिल रात

भविष्य के संदर्भ में शब्दों का मूल्य आँकता
पुआल के गोंथर में लेट गया था मैं

नींद कैसे आई / कब आई / मुझे पता नहीं
पर / जैसा कि बचपन में होना चाहिए
झुनझुना बजाती
वह देने लगी थी सुखद हिचकोरियाँ

कुछ माह / कुछ वर्ष बीतने के उपरान्त
जब मैंने देखा / जनतंत्र में उभरते लोगों
उनके प्रबल समर्थकों को
मुझे लगा / इन सबने जरूर देखा होगा
बेहतरीन सपना / तभी-तो रातो-रात
हुमक कर बैठ लिये हैं दमदार कुर्सियों पर

यह सोचता / मैं कुआर की धूप में
रंगीन तितली-सा उड़ने लगा था कल्पना-लोक में

सब-कुछ सामान्य रूप में चल रहा था
पर जाने कहाँ से आ गये एक मित्र
पूछ दिया / बात क्या है
इन दिनों जरूरत से अधिक खामोश क्यों हो
क्या बता सकते हो मुझे आधारभूत कारण
सम्भव है मैं दे सकूँ
तुम्हारे शब्दों को समय का अर्थ

प्रश्नवाचक चिह्न ज्यों मित्र को देख
मैंने कहा / खास बात नहीं है
एक सपना देखने के लिए इन दिनों परेशान हूँ

यह ऐसी कल्पना है
जिसमें कोई मदद नहीं कर सकता मेरी
अकेले-ही लगाना पड़ेगा संयमित ध्यान
मेरे लिए / अजीब आ गया इम्तहान

क्या मतलब / वह आश्चर्य में बिछलता-सा
निहारने लगा था / आसमान की ऊँचाई
जैसे नन्हा चूहा पहाड़ उठाने की कोशिश में हो

मैं हँसा / जोर से हँसा
फिर उसे चिंता न करने का उपदेश दिया
बाद में बैठ गया बगल में / चौरस पत्थर पर

मैंने कहा
सुनों मेरी बात / तर्क का वास्तविक राज
इस बीच / वह सचमुच इतना उत्सुक हो गया
अनायास / सहज भाषा में बोल पड़ा
देर क्यों करते हो / तुम
हवा में मत खोजो जानदार शब्द
शब्द वही ठीक होंगे । जो निकलेंगे दिल से

तो सुनो / मैं देश में किससे कम हूँ
किन्तु अधिकांश लोगों से पीछे हूँ
जिन्हें भाषा में जीवन का सम्यक बोध नहीं
वही बन रहे हैं नेता-अभिनेता / मंत्री-महामंत्री

मैंने क्या बिगाड़ा है किसी का
जब कभी उठकर बढ़ता हूँ आगे की ओर
लोग जबरन खींच लेते हैं पैर
किचकिचा कर उमेठ देते हैं दोनों कान

कहते हैं / ऊँची कुर्सी तक पहुँचने के पूर्व
समझ लो खुद की औकात
औकात सोचे बगैर मत करो बात
अभी तुम्हारे सामने पड़ी है / लम्बी रात

बताओ मेरे मित्र
जनतंत्र को समझे बगैर
लोग अंट-संट चला रहे हैं देश की गाड़ी
इनसे बड़ा कौन हो सकता है अनाड़ी

मेरा जैसा साधारण / उपेक्षित समूह का आदमी
यदि होना चाहता है मंत्री महामंत्री प्रधानमंत्री
इसमें हर्ज क्या है / फर्ज बनता है हर-एक का
सही व्यक्ति को समर्थन दें
पर ऐसा नहीं होता / चलने लगता है षडयंत्र
गरीबों के प्रतिनिधि के खिलाफ / सब उठा लेते हैं अस्त्र

यह सब होने के लिए मुझे देखना पड़ेगा / एक सपना
स्वप्न-दर्शन बिना राजतंत्र पर नहीं जम पायेगा हाथ

मेरी यह दुनिया

जिंदगी के उन क्षणों / दिन और रातों को
जिन्हें जीना पड़ा है धुर बचपन में
याद कर काँप जाती है देह
चकरा जाता है दिमाग
जैसे देह के चारों तरफ धधक रही हो आग

सोचता हूँ तब
अस्तित्व का संकट कितना भयानक होता है
जब घिरते हैं जीवन में काले घन
दुर्दिन का आगमन कौन रोक पाया है जतन से

वैसे देह काँपने के लिए नहीं
समस्याओं से जूझने / व्यथाओं से निपटने
साफ तरीके से बच निकलने के लिए बनी है
पर मनोविज्ञान से कैसे भिड़ा जाय
कुण्ठा मुक्ति असाधारण समस्या है समाज में

एक उठता / दूसरा गिरता / तीसरा
आसमान में अटकता है त्रिशंकु ज्यों
कोई न किसी के पक्ष में है
न उठाता है बार-बार विरोध में हाथ
संतुलन / परिस्थिति के प्रभाव का परिणाम है

मंदिर-मस्जिद / धर्म और दर्शन में
या कि उपदेश और प्रवचन में
कोई जगह नहीं है गरीब के लिए
संघाचार्य मँडराते हैं राजघरानों के आस-पास
जहाँ धन है / वहीं फहरता है धर्म का ध्वज

साधारण रोटी के असाधारण संघर्ष में
चलते-फिरते / उठते-बैठते / अन्ततः थक गया
थक कर बैठ गया / छायाहीन वृक्ष तले
आकाश कितना सहृदय रहा / इस बीच
मुझे / सचमुच नहीं मालूम
क्योंकि मैं सोच रहा था
वृक्ष सृष्टि का श्रेष्ठ उपादान क्यों है

जीवन में घटित हर जटिल घटना को
विवश / ढोता रहा तब-तक
भुजाओं में शक्ति का जब-तक अभाव रहा
फिरहरी-सा नाचना अशक्त की विवशता है

एक दिन की घटना है / घटना क्या दुर्घटना है
जमींदार के खेत में फावड़ा चलाते / जब थक गया
लगा कि देह काबू के बाहर है / तब
आँख के सामने उड़ती तितलियों के आतंक
भयावह दृश्यों से बचता / मैं बैठ गया था छाया में

छाया की माया
माया की छाया का / दोनों के संघर्ष बीच
सिहरती फिर दुबकती-सी काया का
पहली बार विचित्र बोध हो रहा था मुझे
समझा कि देह बगैर हर तपस्या खण्डित है
जो हर तरह से संतुलित / वही पण्डित है

चिंताओं के दबाव में समझ न पाया
जिंदगी किस तरह चलेगी इस पथ पर
जिस पर दूर तक / रोशनी का अभाव है

जब कभी कोई गरीब समझ की तहत
दौड़ता है रोशनी प्राप्त करने के अर्थ
उसे अँधेरे में जड़ दिया जाता है लाठी का हूरा
रक्त के साथ फल्ल-से निकल आता है देह का चूरा
चूरा देख फुसफुसाते हैं कुछ लोग
चलो / कोई खास बात नहीं / हत्या सार्थक है

बताओ ऐसे समाज का क्या भरोसा
जो इन दिनों जोरदार पैमाने पर बन रहा है
हिंस्र पशुओं का अभयारण्य
लोग कुलाच भर
हर चीज पर कर ले रहे हैं कब्जा
जैसे बाघ / जंगल में कर रहा हो शक्ति का प्रदर्शन

अचेतपन से बचने के निमित्त
मैं सम्हाल रहा था खुद को / एक तरफ
जमींदार गलाफाड़ लहजे में
तड़क रहा था दूसरी तरफ
भड़क से थरथरा रहा था सम्पूर्ण सिवान

जैसे आदमी नहीं
गँवई कुत्ते की उपेक्षित औलाद हूँ
जिसे दुतकारना फिर गरियाना
अन्त में पौलिया कर भगा देना जरूरी होता है
अन्यथा लग सकता है / भयाहू छूने का पाप
हाय रे हाय / गजब है देश
जहाँ ज्यादातर लोग धतिंगढ़ बन नाच रहे हैं निर्भय

जाने-अनजाने / इस बीच सचमुच
कहीं से आ गये कुछ बलिष्ठ कुत्ते
मालिक का पैर चाट / वे घूरने लगे थे मुझ

कभी आगे कभी पीछे / कभी बगल की ओर
खुरिहार कर उड़ाने लगे थे धूल
जैसे संकेत मिलते-ही वे उड़ा देंगे मेरी देह

भला हो कुत्तों का
कुछ देर बाद / जाने क्यों
उछलते-से वे भाग लिए थे नदी की ओर
भौंकते / दाँत निकालते / कला दिखाते हूए
शायद / जितना फर्ज बनता था
उससे अधिक / वे अपनी ताकत भर अदा कर चुके थे

आफत का मारा / मैं चुप था
जमींदार बगल में खड़ा / पूर्ववत बक रहा था
सात पीढ़ियों के नाम घिसे-पिटे गँवई शब्द
जैसे उदात्त किस्म की गालियाँ सुन
मैं बन जाऊँगा / मुर्दाघाट का मुहावरा

जूते की नोक से बार-बार देह छू
चिल्ला पड़ा वह / उठ बे सुअर की औलाद
खैरियत इसी में है
उठ कर भाग जा
जैसा कि आतंक के क्षण होना चाहिए गाँव में

उठा नहीं / अब-भी लेटा है
क्या धरती का बेटा है
तुम्हें बचाने जो आयेगा समीप में
भाग्यहीन / वह सबक पायेगा भविष्य में

हवा का संतुलन लगातार विगड़ता देख
कहीं से दौड़ कर आ गये
संतू गब्बू बच्चू / उत्साही छदम्मी लाल
प्रणामी मुद्रा बना सब कहने लगे / एक स्वर में

मालिक ! दो दिन से भूखा है यह
मालिक ! मजदूरी नहीं मिली है इसे
मालिक ! रोटी बगैर फावड़ा भाजना मुश्किल है
मालिक ! इसका बाप बीमार है तीन दिन से
मालिक ! चार दिन पहले जल गया है इसका झोपड़ा
मालिक ! चिंता गजब चीज है देह में
मालिक ! यह पशु नहीं / इंसान है
मालिक ! चेहरा देखिए / कितना अच्छा जवान है
मालिक ! खाने का इंतजाम हो जाय
फिर क्या / यह हो सकता है हिन्दुस्तान के लिए
एक आदर्श नागरिक

क्या आप नहीं चाहते
हिन्दुस्तान में भले लोगों का एक ऐसा समूह तैयार हो
जो पुराना इतिहास बदल / नया इतिहास प्रस्तुत कर दे
हँसें लोग / कहें कि अब जमाना बदल गया है

मालिक ! इस पर दया करें अब
मालिक ! मजदूरी देने की बात सोचें अब
मालिक ! अनर्थ का रास्ता छोड़ें अब
मालिक ! गरीबों के खिलाफ पैर न उठायें अब

मालिक ! आप खुद सही आदमी बन जायँ अब
मालिक ! देश में हवा बदल रही है अब
मालिक ! दिन को दिन / रात को रात कहें अब
मालिक ! किसी दिन कुछ हो सकता है अब

शोषक कब बर्दाश्त कर सकता है
चमकदार शब्द ! दो टूक अभिव्यक्ति
वह आवेश में हाथ उठा हड़क चला
गुस्से से भड़क पड़ा
संतू के साथ गब्बू पर झपट पड़ा
सिवान में इस बीच जाने क्या-क्या हो गया

कहाँ / कैसे भगे वे सब / पिटते-पिटाते
मुझे पता नहीं
आँधी में कौन बचा पाया है दीपक की लौ

हाँ / मौका मिलते-ही / छदम्मी ने सहारा दे
मुझे पहुँचा दिया / जले झोंपड़े के सामने
जहाँ पिता / भयवश
आकाश को निहारते / ले रहे थे लम्बी साँसें

वे बोले नहीं / चुप थे
समझ गये थे सम्पूर्ण कहानी
शरीर साबूत था / यही उनके लिए पर्याप्त था

छदम्मी काफी देर तक
सिर झुका / चुपचाप बैठा रहा
हुक्का गुड़गुड़ा सान्त्वना के शब्द रखता रहा
बाद में चलते समय / उसने प्यार के लहजे में कहा

अब तुम गाँव छोड़ दो
अच्छा हो / कोई और रास्ता खोज लो
गाँव में कौन है / जो तुम्हें देगा सहारा
दुर्भाग्यवश / राक्षस से पड़ गया है पाला
यद्यपि / अनुकूल समय आने के ठीक बाद
हम-सब इसका मुँह जरूर कर देंगे काला

यह गरीब की अमीर से लड़ाई है
इस लड़ाई का कभी अन्त नहीं होगा
फिलहाल / भविष्य में जो होगा / ठीक होगा

छदम्मी की बात सुन देर तक गुनता रहा
गुन कर खुद को / भीतर से टटोलता रहा
सोचा / छदम्मी ने जो कहा / बिल्कुल सही कहा

न चाह कर भी / एक अपरिचित भोर में / विवश मन
चल पड़ा था मैं / शहर की ओर

गाँव से ऊबे आदमी का एक-ही लक्ष्य / एक-ही रास्ता है
उस रास्ते को पकड़ / भूलता-भटकता सोचता-पछताता
मन को साहस दिलाता
वह पहुँच जाता है / किसी महान शहर के समीप

शहर / जहाँ भागमभाग है / भीड़ है
भीड़ / जिसमें कोई किसी को पहचानता नहीं
केवल दौड़ है होड़ है / रोजी-रोटी पा लेने की

शहर / जहाँ असंख्य लक-दक बंगले हैं / कारें हैं
पाँच सितारा होटल / चमकदार दूकाने हैं
सच-तो यह / जो वहाँ नहीं वह कहीं नहीं है

शहर / जिसके नुक्कड़ चौराहों पर
अलंकृत पार्क / गली-गलियारों में
रोज संध्या समय इकट्ठे होते हैं छोटे नेता
जुटाते हैं भीड़ / कभी कम कभी ज्यादा

बाद में आते हैं तथाकथित महान नेता
पहले खुजलाते हैं सिर

सँवारते हैं दाढ़ी के लटकदार बाल
फिर बकते हैं जनता को भड़काने
खुद के पक्ष में खींचने के अर्थ शानदार शब्द

जैसे शब्द ही तैयार करते हैं देश में जनाधार
सत्य नहीं / असत्य के प्रति लोगों में उठ रहा है प्यार

अभावग्रस्त परेशान जनता / युवक
अन्त में बजाते हैं ताली
जैसे / जो-कुछ कहा गया / वही युग-सत्य है

शहर की अजब लीला है
हर आदमी यहाँ / सड़क पर जोशीला है

हाँ / मैं अब ऐसे-ही एक शहर में
जाने कैसे-कैसे पहुँच गया हूँ
चाय की दूकान में / भट्ठी पर कोयला दहका रहा हूँ

सोच लिया / गरीब को हर जगह जूझना है
चाहे गाँव हो / चाहे शहर
खटने के बाद / तब कहीं पेट भरना है